



अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 41 अंक-22

कल्पादि सम्वत् 1972949117

सम्पादक

मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 23 अगस्त से 29 अगस्त 2017 तक

भाद्रपद शुक्ल द्वितीया से भाद्रपद शुक्ल अष्टमी सम्वत् 2074 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये

पृष्ठ संख्या 12

अपनी मदद
आप...

पृष्ठ- 3

आयुर्वेद का
अनमोल..

पृष्ठ- 4

पशु पालन
के बिना..

पृष्ठ- 5

हिन्दू अस्तित्व,
संकट...

पृष्ठ- 8

अनुपस्थित
माननीयों...

पृष्ठ- 12

- सोच की आजादी कब मिलेगी?
- कश्मीर का बिना शर्त भारत में पूर्ण विलय, फिर अनुच्छेद 370 का क्या औचित्य
- हरियत कान्फ्रेंस के नेताओं की गिरफ्तारी
- गौ-वध के विरुद्ध संत गोपाल दास के नेतृत्व में देश करेगा जन युद्ध

श्री राम जन्मस्थान, श्रीकृष्ण जन्मस्थान, काशी विश्व नाथ मंदिर व तेजोमहालय शिव मंदिर की भूमि के तत्कोल मुक्त किया जाये

● संवाददाता ●

आगरा। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा ने आगरा जिला कार्यालय का एवं आगरा मंडल कार्यालय का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया। श्री शर्मा ने भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी व उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री महंत आदित्यनाथ योगी से अयोध्या स्थित श्रीराम जन्मस्थान, मथुरा स्थित श्रीकृष्ण जन्मस्थान, वाराणसी

शेष पृष्ठ 11 पर



चीन ने फिर दी धमकी

भारत की ओर से चीन को करारा जवाब मिले—हिन्दू महासभा

● संवाददाता ●

डोकलाम गतिरोध खत्म करने के लिए एक साथ दोनों देशों के सैनिकों को हटाने के भारत के सुझाव को खारिज करते हुए चीन ने हैरानगी जताते हुए कहा कि यदि यह उत्तराखंड के कालापानी क्षेत्र या कश्मीर में घुस जाएगा, तब नई दिल्ली क्या करेगा। यह पहला मौका है जब किसी चीनी अधिकारी ने कश्मीर मुद्दे को उछाला है। हालांकि सरकार संचालित ग्लोबल टाइम्स में इस तरह की एक टिप्पणी की गई थी। भारतीय सैनिकों ने चीनी सेना को सिक्किम के डोकलाम सेक्टर में एक सड़क बनाने से रोक दिया जिसके बाद इलाके में 50 दिनों से भारत और चीन के बीच गतिरोध चल रहा है। चीन ने दावा किया कि यह अपनी सरजमीं के अंदर सड़क बना रहा है और वह विवादित डोकलाम पठार से भारतीय सैनिकों को फौरन हटाने की मांग कर रहा है। भूटान ने कहा है कि डोकलाम उसका क्षेत्र है, लेकिन चीन ने इस इलाके को अपना होने का दावा किया है और कहा है कि थिम्पू का बीजिंग के साथ इस मुद्दे पर कोई विवाद नहीं है। चीनी विदेश मंत्रालय में सीमा और सागर मामलों की उप महा निदेशक वांग वेनली ने कहा कि एक दिन के लिए भी यदि सिर्फ एक भारतीय सैनिक भी रहता है तो भी यह हमारी संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का उल्लंघन है। यह पूछे जाने पर कि क्या भारत के साथ चीन युद्ध की तैयारी कर रहा है, वांग ने कहा मैं सिर्फ इतना कह सकती हूँ कि पीएलए और चीन सरकार के लिए हमारे पास प्रतिबद्धता है। इसलिए यदि भारत गलत रास्ते पर

शेष पृष्ठ 11 पर



सकारात्मक सोच का जीवन में महत्त्व

भगवान की रचित सृष्टि में मनुष्य ही एक ऐसा जीवात्मा है जिसे ईश्वर ने एक महान उपलब्धि से नवाजा है और वह है मनुष्य के सोचने की शक्ति। मनुष्य ही है जो उचित और अनुचित में अंतर समझता है। सोच-विचार की शक्ति को आगे बढ़ाएँ तो सकारात्मक सोच तक पहुँचकर हम जीवन में एक सुनिश्चित मार्ग पर चल सकते हैं।

जीवन में हमें जो भी प्राप्त होता है हम उस देन से पूर्णतया प्रसन्न न होकर नकारात्मक रवैया अपना लेते हैं, केवल यह सोचकर कि हमें भगवान ने फलां-फलां सुख क्यों नहीं दिए। जो सुख प्राप्त है उसका भी पूर्ण आनन्द अनुभव न करके प्रभु का शुक्रिया अदा भी नहीं करते। कई लेखकों एवं कवियों ने अपनी प्रेरणादायक रचनाओं से समाज में नव-चेतना लाने का भरसक प्रयत्न किया है, और आगे भी प्रयत्न जारी है। क्या खूब कहा है एक कवि ने—

“मुझे तूने मालिक बहुत कुछ दिया है,
तेरा शुक्रिया है, तेरा शुक्रिया है।
यह बन्दा तो तेरे सहारे जिया है,
तेरा शुक्रिया है, तेरा शुक्रिया है।”

लेकिन हम शिक्षित होते हुए पढ़ने और समझने के बाद भी नकारात्मकता की चादर ओढ़ लेते हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यदि भौतिक सुखों की बातें करें तो उनकी प्राप्ति की एक सीमा तय कर लेनी चाहिए। आज धन-अर्जन के लिए अंधी होड़ लगी हुई है। मानती हूँ आज के महंगाई के युग में धन-दौलत बहुत अनिवार्य है। पर माफ कीजिएगा, धन महत्त्वपूर्ण होते हुए भी सब कुछ नहीं। आज हमने धन को ही अपना माई-बाप बना लिया है। अति किसी भी पदार्थ की हो, बुरी है। समय रहते हम सबको समझना चाहिए। वेदों में स्पष्ट रूप से कहा है कि हमें प्रभु से धन-सम्पदा, समृद्धि सब कुछ प्रार्थना के बाद मिल जाता है। प्रभु अपने भक्तों की सच्ची प्रार्थना जो हृदय से निकलती है, सुनते हैं और हमारी तमन्नाओं को पूर्ण करते हैं।

आवश्यकता इस बात की है कि हमारी कमाई शुद्ध एवं सात्विक हो। मर्यादित जीवन शैली अपनाते हुए भौतिक एवं अभौतिक का सामंजस्य होना जरूरी है। सकारात्मक विचारधारा रखना अनिवार्य है। हम यह न सोचें कि हमारे सामने वाले की कमीज हमारी कमीज से सफेद क्यों है? अर्थात् अपनी पवित्र कमाई में ही संतुष्ट रहना चाहिए। किसी के सुख को देखकर दुःखी होना नकारात्मक सोच का नमूना है। कई ऐसे उदाहरण हो सकते हैं जहाँ हम पाएँगे कि ऐसे भी लोग हैं जिनके पास हमसे कम सुख-सुविधाएँ होंगी। पर क्या मालूम वे हमसे अधिक आशावादी और सही सोच वाले हों। हमें अपने सुखों के दायरे में रहते हुए, प्रभु का शुक्रिया करके जीवन-यापन करना चाहिए। जीवन को जीने का वास्तविक आनन्द तभी प्राप्त होगा।

कमलेश चान्दना

विश्व आर्य महासम्मेलन ६-७-८ अक्टूबर में म्यांमार में होगा।

बुलन्दशहर। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार विश्व आर्य महासम्मेलन म्यांमार (बर्मा) में ६ से ८ अक्टूबर को होगा। यह सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा १५, हनुमान रोड़, कनाट प्लेस नई दिल्ली-११०००१ के तत्वावधान में होगा। यह निश्चय २०१२ में ही हो गया था। इसमें भाग लेने हेतु म्यांमार में ही जन्में इन्द्र देव गुलाटी भी जाएंगे। वे वहाँ जाकर अपने सगे-सम्बन्धियों और परिचितों से भी मिलने का पूरा प्रयास करेंगे। वे वहाँ से १६५३ में भारत में आए थे।

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह कुछ लोगों के परिवार में तनाव भरा माहौल बना रह सकता है। जो लोग साझे या सहयोग से कार्य कर रहे हैं उनको थोड़ा सा सावधान रहने की जरूरत है। घर-परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार होने की संभावना है। कार्य व्यापार में वृद्धि होने की संभावना है।

वृष : इस सप्ताह आप धार्मिक क्रिया-कलापों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे किन्तु धार्मिक आडम्बरों से बचें। दाम्पत्य जीवन में प्रेम बढ़ेगा और सन्तान के आगमन से घर में खुशी का माहौल बनेगा।

मिथुन - इस सप्ताह कुछ लोग आर्थिक मामले में इस समय कुछ सुधार जरूर होगा, लेकिन खर्च की अधिकता के कारण धनाभाव की स्थिति बनी रहेगी। यदि आप व्यवसाय में साझेदारी करेंगे तो उसके समय अनुकूल है। नौकरी पेशा वालों के लिए प्रमोशन के योग बन रहे हैं।

कर्क - इस सप्ताह सुविचारित योजनाओं में प्रगतिशीलता के मार्ग प्रशस्त होंगे। हर कार्य के प्रति दिलचस्पी ठीक है, लेकिन प्रत्येक कार्य को स्वयं करना उचित नहीं है। ऑफिस के रंग-ढंग में कुछ परिवर्तन नजर आयेगा। नये विचारों को गति देने की जरूरत है।

सिंह - इस सप्ताह दैनिक कार्यों में आप की रुचि न के बराबर ही रहेगी। समाज के लोगों के प्रति आपके मन में दया के भाव आ सकते हैं, परन्तु आप उनके लिए कुछ कर नहीं पायेंगे इसका मलाल रहेगा। जो लोग नया व्यवसाय व कार्य करना चाहते हैं, उनके समय अनुकूल है।

कन्या - इस सप्ताह आप कुछ कर गुजरने के लिए लालायित रहेंगे, जिससे आपकी एक नई पहचान बनेगी। आमदनी की उतनी बढ़ोत्तरी नहीं होगी, जितनी आप अपेक्षा करेंगे। शुगर रोग से पीड़ित वाले व्यक्ति विशेष सावधानी बरतें। आपके परिवार में अचानक मतभेद उत्पन्न होंगे।

तुला - इस सप्ताह आपको निज कार्यों के लिए संसाधन जुटाने में काफी मशक्कत करनी पड़ सकती है। दूर-दराज के लोगों से नजदीकी सम्बंध बनेंगे। अनावश्यक खर्चों पर विराम लगाने की जरूरत नजर आ रही है। आय व व्यय में समानता की स्थिति बनी रहेगी।

वृश्चिक - इस सप्ताह आपको विरोधियों का डटकर मुकाबला करना पड़ेगा जिससे सामाजिक मान-सम्मान में कुछ कमी आ सकती है। लेकिन सकारात्मक रहने से आप सफल होंगे। लम्बित योजनाओं पर शीघ्र कार्य प्रारम्भ करना ही हितकर रहेगा।

धनु - इस सप्ताह परिस्थितियों को ध्यान में रखकर आपको काम करना होगा। आप जिस व्यक्ति की उपेक्षा करेंगे, सम्भवतः उसी से आपका कोई आवश्यक कार्य पड़ सकता है।

मकर - घरेलू खर्चों में व्यय की अधिकता बनी रहेगी जिसके फलस्वरूप परिवार में किसी से कहा-सुनी हो सकती है। आप-अपनी आन्तरिक शक्तियों का जगाने का प्रयास करें तभी मानसिक शान्ति मिल सकती है।

कुम्भ - आपको सावधान रहने की आवश्यकता है अन्यथा किसी कारणवश व्यर्थ के विवाद में आप फंस सकते हैं। मोह और अपेक्षा ही दुःख के कारण होते हैं, अतः आप इन सब चीजों से जितना दूर रहेंगे उतना ही आप सुख के करीब रहेंगे।

मीन - कुछ लोगों को अचानक कार्यवश यात्रा करनी पड़ सकती है। समय और सम्बन्ध दोनों के प्रति सतर्क और सकारात्मक रहने की आवश्यकता है। जीविका से जुड़े कार्यों के प्रति मन कुछ उदासीन हो सकता है। आय के अनुसार ही व्यय करेंगे तो अच्छा रहेगा।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

पितासि लोकस्य चराचरस्य त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्।

न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्योलोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभावः॥

आप इस चराचर जगत् के पिता और सबसे बड़े गुरु एवं अति पूजनीय हैं, हे अनुपम प्रभाववाले! तीनों लोकों में आप के समान भी दूसरा कोई नहीं है, फिर अधिक तो कैसे हो सकता है॥१४३॥

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायंप्रसादये त्वामहमीशमीडयम्।

पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः प्रियः प्रियायार्हसि देव योद्धुम्॥

अतएव हे प्रभो! मैं शरीर को भलीभाँति चरणों में निवेदित कर, प्रणाम करके, स्तुति करने योग्य आप ईश्वर को प्रसन्न होने के लिये प्रार्थना करता हूँ। हे देव! पिता जैसे पुत्र के, सखा जैसे सखा के और पति जैसे प्रियतमा पत्नी के अपराध सहन करते हैं—वैसे ही आप भी मेरे अपराध को सहन करने योग्य हैं॥१४४॥

अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा भयेन च प्रव्यथितं मनो मे।

तदेव मे दर्शय देवरूपंप्रसीद देवेश जगन्निवास॥

मैं पहले न देखे हुए आपके इस आश्चर्यमय रूप को देखकर हर्षित हो रहा हूँ और मेरा मन भय से अति व्याकुल भी हो रहा है, इसलिये आप उस अपने चतुर्भुज विष्णुरूप को ही मुझे दिखाइये! हे देवेश! हे जगन्निवास! प्रसन्न होइये॥१४५॥

किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तमिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव।

तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन सहस्त्रबाहो भव विश्रवमूर्ते॥

मैं वैसे ही आपको मुकुट धारण किये हुए तवा गदा और चक्र हाथ में लिये हुए देखना चाहता हूँ, इसलिये हे विश्वस्वरूप! हे सहस्त्रबाहो! आप उसी चतुर्भुजरूप से प्रकट होइये॥१४६॥

अपनी मदद आप



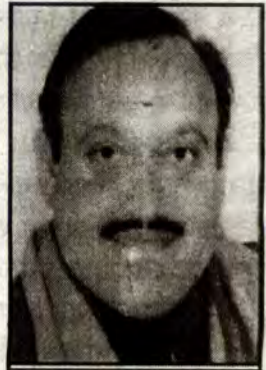
देश के आधुनिक शहरों में एक चंडीगढ़ में एक युवती ने अपनी सूझबूझ व साहस से खुद को बचाकर यह संदेश देश भर की लड़कियों को दे दिया है कि अगर सुरक्षित रहना है, तो अपनी मदद आप करनी होगी। आत्मनिर्भर होना होगा, आत्मरक्षा में सक्षम होना होगा। क्योंकि दोहरी मानसिकता से ग्रसित इस समाज में लड़कियों के लिए इज्जत का भाव लगभग नदारद है। कहीं भी किसी के भी साथ किसी भी किस्म का हादसा हो सकता है और फिर उसकी जिम्मेदारी लड़की पर डालने के लिए हजार दलीलें भी पहले से तैयार रहेंगी। मसलन वह रात को क्यों निकली। वह पुरुष मित्र के साथ क्यों थी। उसे अकेले निकलने की क्या जरूरत थी। उसने जींस टाप या आधुनिक वस्त्र क्यों पहने थे। उसने लड़कों को जवाब देने की जरूरत क्यों की आदि आदि। कभी कोई लड़कों से तो यह नहीं पूछता या बताता कि तुम्हें रात में घूमने से बचना चाहिए या हमेशा किसी अंगरक्षक की व्यवस्था करके निकलना चाहिए। उन्हें बेघड़क आवाजाही की छूट मिली हुई है और शायद इस बात की भी कि वे लड़कियों के साथ अभद्र व्यवहार करें। बेशक निर्भया कांड के बाद बलात्कार से लेकर छेड़खानी तक पर कानून सख्त बना दिए गए हैं, लेकिन उसका कितना असर हो रहा है। यह नजर आ रहा है। लड़कियां अब भी उतनी ही जितनी पहले ताजा घटना उत्तर प्रदेश के की तर्ज पर आपरेशन दुर्गा चलाया था।

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

कि लड़कियों को मनचलों से बचाया जा सके। लेकिन यह कार्यक्रम शायद सरकारी फाइलों में ही बंद है, तभी तो यहां एक लड़की को सरेराह छेड़ कर, उसके अपहरण की कोशिश की जाती है और फिर उस पर पूरी बेशर्मी से लीपापोती भी की जाती है। चंडीगढ़ में जिस बहादुर लड़की ने खुद को बचाया, वह एक आईएसएस अधिकारी की बेटी है। उसके पिता समेत पूरा परिवार उसके साथ है। इस घटना की विस्तृत जानकारी साझा करने अपनी आपबीती सुनाने की उसने हिम्मत दिखाई तो उसके परिजनों ने उसका हौसला बढ़ाया। अन्यथा होता यही है कि चुपचाप रहने, बात को ज्यादा तूल न देने की सलाह मिलती है। घरवाले लड़की का भला इसी में देखते हैं। क्योंकि समाज का नजरिया अब भी इतना दुरस्त नहीं हुआ है कि पीड़ित लड़की के साथ खड़े हो जाए। इस पर भी अगर आरोपी रसूखदार परिवार से हो, तब तो बात को आगे बढ़ाने में कई किस्म के खतरे भी हैं। चंडीगढ़ मामले में आरोपी सत्तारूढ़ भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सुभाष बराला का पुत्र विकास बराला और उसका दोस्त है। पीड़िता का कहना है कि जब वह चंडीगढ़ सेक्टर ८ से चक्कुला के लिए अपनी कार में निकली तो इन युवकों ने उसका काफी दूर तक पीछा किया और गाड़ी रोककर अपहरण की कोशिश भी की। उस युवती ने हिम्मत न खोते हुए पुलिस को फोन किया और पुलिस के कहे अनुसार गाड़ी रोके बिना चलती रही, कुछ दूर जाने पर जब इन युवकों ने गाड़ी का रास्ता रोककर दरवाजा खोलने की कोशिश की, लेकिन तभी पुलिस आ गई और वह अपहृत होने से बच गई। पीड़िता ने कहा कि उस समय मेरे सामने दो ही रास्ते थे या तो मैं चुपचाप गाड़ी चलाती रहती या फिर पुलिस को सूचित करती। मैंने पुलिस को बताना बेहतर समझा। इस मामले में यह नजर आ रहा है कि लड़की पढ़ी-लिखी है और सक्षम परिवार से है तो उसे हिम्मत दिखाने का हौसला भी आया, लेकिन अगर यहाँ कोई साधारण परिवार की लड़की होती तो क्या वह इस तरह अपनी रक्षा कर पाती। हरियाणा सरकार के आपरेशन दुर्गा और बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ जैसे कार्यक्रमों की जमीनी हकीकत इस एक प्रकरण से ही जाहिर हो गई है। चूंकि आरोपी भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष का बेटा है, तो इस पर अब राजनीति भी हो रही है। भाजपा के ही एक सांसद ने सुभाष बराला को नैतिकता के आधार पर इस्तीफा देने की मांग की है, जबकि सुब्रमण्यम स्वामी ने जनहित याचिका दायर करने का फैसला लिया है। भाजपा के कई बड़े नेताओं समेत मुख्य महिला सांसद व विधायक भी इस मसले पर खामोश हैं। कांग्रेस को भाजपा को घेरने का एक मौका मिल गया है। इस सबसे राजनीतिक मकसद तो शायद साध लिया जाएगा, लेकिन लड़कियों के लिए नजरिया बदलने का सवाल अब भी अनुत्तरित ही रहेगा। सरकारें चाहें किसी भी दल की हों, लड़कियों के लिए असुरक्षा तो हर ओर एक जैसी ही है। इस पूरे मामले में पुलिस की भूमिका काफी अहम है। किंतु अगर वह अपनी भूमिका का निर्वहन बिना दबाव के, ईमानदारी से कर ले, तो शायद इस देश की लड़कियों को थोड़ा सुरक्षित होने का अहसास हो जाए।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सोच की आजादी कब मिलेगी?



भारत हर साल १५ अगस्त को अपना स्वतंत्रता दिवस मनाता है। यह दिन जहां हमारे आजाद होने की खुशी लेकर आता है वहीं इसमें भारत के खण्ड-खण्ड होने का दर्द भी छिपा होता है। वक्त के गुजरे पन्नों में भारत से ज्यादा गौरवशाली इतिहास किसी भी देश का नहीं हुआ। लेकिन भारतीय उपमहाद्वीप से ज्यादा सांस्कृतिक, राजनैतिक, सामरिक और आर्थिक हमले भी इतिहास में शायद किसी देश पर नहीं हुए। और कदाचित किसी देश के इतिहास के साथ इतना अन्याय भी कहीं नहीं हुआ। वो देश जिसे इतिहास में विश्व गुरु के नाम से जाना जाता हो, उस देश के प्रधानमंत्री को आज मेक इन इंडिया की शुरुआत करनी पड़ रही है। सोने की चिड़िया जैसे नाम जिस देश को कभी दिया गया हो, उसका स्थान आज विश्व के विकासशील देशों में है। शायद हमारा वैभव और हमारी समृद्धि की कीर्ति ही हमारे पतन का कारण भी बनी। भारत के ज्ञान और सम्पदा के चुम्बकीय आकर्षण से विदेशी आक्रमणता लूट के इरादे से इस ओर आकर्षित हुए। वे आते गए और हमें लूटते गए। हर आक्रमण के साथ चेहरे बदलते गए लेकिन उनके इरादे-वो ही रहे, वो मुठ्ठी भर होते हुए भी हम पर हावी होते गए। हम वीर होते हुए भी पराजित होते गए, क्योंकि हम युद्ध कौशल से जीतने की कोशिश करते रहे और वे जयचंदों के छल से हम पर विजय प्राप्त करते रहे, हम युद्ध भी ईमानदारी से लड़ते थे और वे किसी भी नियम को नहीं मानते थे। इतिहास गवाह है, हम दुश्मनों से ज्यादा अपनों से हारे हैं। हमें भी शायद अपनी इसी भूल की सजा मिली जो हमारी वृहद सीमाएं आज इतिहास बन चुकी हैं। वो देश जिसकी सीमाएं उत्तर में हिमालय, दक्षिण में हिन्द महासागर, पूर्व में इंडोनेशिया और पश्चिम में ईरान सिमट कर रह गई और हम आजाद भारत कहने अखंड भारत का स्वप्न चाणक्य ने देखा था और चन्द्रगुप्त के साथ में बदला भी था। तब से

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

इसवीं तक भारत ने इतिहास का स्वर्णिम काल अपने नाम किया था। लेकिन ७१२ ईस्वी में सिंध पर पहला अरब आक्रमण हुआ फिर १००१ ईस्वी से महमूद गजनी, चंगेज खान, अलाउद्दीन खिलजी, मुहम्मद तुगलक, तैमूरलंग, बाबर और उसके वंशजों द्वारा भारत पर लगातार हमले और अत्याचार हुए। १६१२ ईस्वी में जहाँगीर ने अंग्रेजों को भारत में व्यापार करने की इजाजत दी। यहाँ इतिहास ने एक करवट ली और व्यापार के बहाने अंग्रेजों ने पूरे भारत पर अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया। लेकिन इतने विशाल देश पर नियंत्रण रखना इतना आसान भी नहीं था यह बात उन्हें समझ में आई १८५७ की क्रांति से। इसलिए उन्होंने फूट डालो और राज करो की नीति अपनाते हुए धीरे धीरे भारत को तोड़ना शुरू किया। लेकिन हम भारतवासी अंग्रेजों की इस कुटिलता को नहीं समझ पाए कि उन्होंने हमारे देश की भौगोलिक सीमाओं को ही नहीं तोड़ा, बल्कि हमारे समाज, हमारी भारतीयता, इस देश की आत्मा को भी खण्डित कर गए। जाते जाते वे इस बात के बीज बो गए कि भविष्य में भी भारत कभी एक न रह पाए। बहुत ही चालाकी से वे हिन्दू समाज को जाती क्षेत्र और दल के आधार पर जड़मूल तक विभाजित कर गए। जरा सोचिए कि क्यों जब हमसे आज हमारा परिचय पूछा जाता है तो हमारा परिचय ब्राह्मण, बनिया, ठाकुर, मराठों, कायस्थ, दलित, कुछ भी हो सकता है लेकिन भारतीय नहीं होता। अंग्रेजों के इस बीज को खाद और पानी दिया। हमारे नेताओं ने जो देश के विकास की नहीं वोट बैंक की राजनीति करते आ रहे हैं। जब इक्कीसवीं सदी के इस ऊपर से, किन्तु भीतर ही भीतर विभाजित भारत की यह तस्वीर अंग्रेज देखते होंगे तो मन ही मन अपनी विजय पर गर्व महसूस करते होंगे। हम हर साल आजादी का जश्न तो धूमधाम से मनाते हैं। लेकिन सोचने की बात यह है कि हम आजाद कहाँ हैं, हमारी सोच आज भी गुलाम है! हम गुलाम हैं अंग्रेजी सभ्यता के जिसका अन्धानुकरण हमारी युवा पीढ़ी कर रही है। हम गुलाम हैं उन जातियों के जिन्होंने हमें आपस में बाँटा हुआ है और हमें एक नहीं होने देती। हम गुलाम हैं अपनी सरकार की उन नीतियों के जो इस देश के नागरिक को उसके धर्म और जाति के आधार पर आंकती हैं उसकी योग्यता के आधार पर नहीं। हम गुलाम हैं हर उस सोच के जो हमारे समाज को तोड़ती है और हमें एक नहीं होने देती। अगर हमें वाकई में आजादी चाहिए तो सबसे पहले अपनी उस सोच, अपने अहम से हमें आजाद होना होगा जो हमें अपनी पहचान केवल भारतीय होने से रोक देती है। हमें आजाद होना पड़ेगा उन स्वार्थों से जो देश हित में रुकावट बनती हैं। अब वक्त आ गया है कि हम अपनी आजादी को भौगोलिक अथवा राजनैतिक दृष्टि तक सीमित न रखें। हम अपनी आजादी अपनी सोच में लाएँ। जो सोच और जो भौगोलिक सीमाएं हमें अंग्रेज दे गए हैं उनसे बाहर निकलें। विश्व इतिहास से सीखें कि जब जर्मनी का एकीकरण हो सकता है, जब बर्लिन की दीवार गिराई जा सकती है, जब इटली का एकीकरण हो सकता है, तो भारत का क्यों नहीं। जिस दिन हम भारत को उसकी खोई हुई अखंडता लौटा देंगे उस दिन हमारी ओर से हमारे वीरों को सच्चे श्रद्धांजलि अर्पित होगी।

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

आयुर्वेद का अनमोल उपहार : त्रिफला

आयुष्य को स्थिर रखने वाला आँवला, रक्षा करने वाली हर्ष व शरीर को निर्मल करने वाला बहेड़ा—इन तीनों श्रेष्ठ औषधियों के संयोग से बना त्रिफला आयुर्वेद के प्राचीन मुनियों द्वारा मानव-जाति को प्रदत्त एक अनमोल उपहार है। यह शरीर में स्थित विकृत कफ, आमदोष व मॉल का पाचन एवं शोधन कर शरीर को निर्मल तथा समर्थ बनाता है। बुद्धि व इंद्रियों (विशेषतः नेत्रों) का जड़त्व नष्ट करके उन्हें कुशाग्र बनाता है। यह वार्धक्य व व्याधियों को रोकने वाला श्रेष्ठ रसायन, मल-निस्सारक, जठराग्नि-प्रदीपक व कफ-पित्तनाशक है। संयमित आहार-विहार के साथ त्रिफला का सेवन करने वाले व्यक्तियों को हृदयरोग, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, नेत्ररोग, पेट के रोग, मोटापा आदि होने की संभावना नहीं होती। यह 20 प्रकार के प्रमेह, विविध कुष्ठरोग,

विषमज्वर व सूजन को नष्ट करता है। अस्थि, केश, दाँत व पाचन-संस्थान को बलवान बनाता है। इसका नियमित सेवन शरीर को निरामय, सक्षम व फुर्तीला बनाता है।

त्रिफला चूर्ण बनाने की विधि : सूखा देशी आँवला, बड़ी हर्ष व



बहेड़ा लेकर गुठली निकाल दें। तीनों सम्भाग मिलाकर महीन पीस लें। कपड़े से छान कर काँच की शीशी में भरकर रखें।

औषधि-प्रयोग

नेत्र-प्रक्षालन : एक चम्मच त्रिफला

चूर्ण रात को एक कटोरी पानी में भिगोकर रखें। सुबह कपड़े से छानकर उस पानी से आँखें धो लें। यह प्रयोग आँखों के लिए अत्यंत हितकर है। इससे आँखें स्वच्छ व दृष्टि सूक्ष्म होती है। आँखों की जलन, लालिमा, आँखों से पानी आना आदि तकलीफें दूर होती हैं।

गण्डूष-धारण (कुल्ला करना)

: त्रिफला रात को पानी में भिगोकर रखें। सुबह मंजन करने के बाद यह पानी मुँह में भरकर रखें।

थोड़ी देर बाद निकाल दें। इससे दाँत व मसूड़े वृद्धावस्था तक

मजबूत रहते हैं। कभी-कभी त्रिफला चूर्ण से मंजन करना भी लाभदायी है। इससे अरुचि, मुख की दुर्गन्ध व मुँह के छाले नष्ट होते हैं।

❖ त्रिफला के गुणगुने काढ़े में शहद मिलाकर पीने से मोटापा कम होता है। त्रिफला के काढ़े से घाव धोने से एलोपैथिक-एंटिसेप्टिक की आवश्यकता नहीं रहती। घाव जल्दी भर जाता है।

❖ गाय का घी व शहद के मिश्रण (घी अधिक व शहद कम) के साथ त्रिफला चूर्ण का सेवन आँखों के लिए वरदानस्वरूप है। संयमित आहार-विहार के साथ इसका नियमित प्रयोग करने से मोतियाबिंद, कांचबिंदु-दृष्टिदोष आदि नेत्र रोग होने की संभावना नहीं होती। वृद्धावस्था तक आँखों की रोशनी अचल रहती है।

❖ मूत्र संबंधी सभी विकारों व मधुमेह में यह फायदेमंद है। रात

को गुनगुने पानी के साथ त्रिफला लेने से कब्ज नहीं रहती है।

❖ मात्रा : 2 से 8 ग्राम चूर्ण दोपहर को भोजन के बाद अथवा रात को गुनगुने पानी के साथ लें। रात को न ले सकें तो सुबह जल्दी भी ले सकते हैं।

❖ त्रिफला का सेवन रेडियोधर्मिता से भी बचाव करता है। प्रयोगों में देखा गया है कि त्रिफला की खुराकों से गामा किरणों के रेडिएशन के प्रभाव से होने वाली अस्वस्थता के लक्षण भी नहीं पाए जाते हैं। इसीलिए त्रिफला चूर्ण आयुर्वेद का अनमोल उपहार कहा जाता है।

सावधानी : दुर्बल, कृश व्यक्ति तथा गर्भवती स्त्री को एवं नए बुखार में त्रिफला का सेवन नहीं करना चाहिए। यदि दूध का सेवन करना हो तो सेवन के बीच 2 घंटे का अंतर अवश्य रखें।

साभार आर्दश पंचायती राज

दादी माँ के हेल्दी टिप्स

- ❖ यदि गला बैठा हो, तो पके चावल के साथ गुड़ खाने से आवाज साफ हो जाती है। काले तिल व गुड़ से निर्मित लड्डू के सेवन से अस्थमा में लाभ होता है।
- ❖ देशी घी के साथ गुड़ का सेवन करने से कान के दर्द में लाभ होता है। पीलिया रोग में 5 ग्राम सौंठ, 90 ग्राम गुड़ के साथ तीन बार सेवन से लाभ होता है।
- ❖ दमा में कफ निकलने पर रोजाना तीन बार, पाँच ग्राम हल्दी की फाँकी गरम पानी से लें। एलर्जिक श्वास रोगों में हल्दी बहुत लाभदायक है। हल्दी और सौंठ का चूर्ण शहद के साथ लेने से भी श्वास मिटता है।
- ❖ फूली हुई फिटकरी और मिश्री का समान भाग लेकर दिन में चार बार, आधा तोले की मात्रा में लेने से दमा मिटता है।
- ❖ एक सप्ताह या आवश्यकता के अनुसार पूर्ण उपवास कर लेने से कठिन से कठिन दमा मिट जाता है।
- ❖ मलाई व नमक मिलाकर खाने से सूखी खाँसी में लाभ होता है।
- ❖ जुकाम होने पर भुने हुए काले चने, नमक व हल्दी लगे हुए लें तथा प्रातः-सायं खूब चबा-चबाकर खाने से लाभ होगा। इसके तुरंत बाद पानी न पीएँ।
- ❖ पायरिया एवं मुँह की बदबू दूर करने के लिए तुलसी के पत्ते, कपूर और लौंग पीसकर गोलियाँ बना लें और मुँह में रखें, पायरिया व बदबू से छुटकारा मिलेगा।
- ❖ सिरदर्द में नींबू वाली चाय अत्यंत लाभकारी है। दूध का प्रयोग न करें।
- ❖ अदरक के रस में शहद मिलाकर सेवन करने से हर प्रकार की खाँसी में विशेष कारगर प्रयोग है।
- ❖ धूप में दिन भर पानी को रखें व उसका सेवन करने से जुकाम में लाभ होता है।
- ❖ रुई में तेल लगाकर एक नथुना बंद करके दूसरे से खींचें। ऐसा दोनों ओर से करें। जुकाम, सिरदर्द में लाभ होता है।
- ❖ पानी में लौंग डालकर खूब उबालकर दिन में 3-4 बार पीने से बुखार व निमोनिया में उपयोगी होता है।
- ❖ गाजर के रस का सेवन करना नजले में उपयोगी है।

स्वास्थ्य का अमूल्य खजाना: मानव मूत्र

शिवाम्बु सेवन की मात्रा - शिवाम्बु गर्म प्रकृति का होने से इसको पीने की एक जैसी विधि का निर्धारण न्यायसंगत नहीं हो सकता। सर्दी की मौसम में अथवा कफ प्रकृति वाले उसका आवश्यकतानुसार स्वविवेक के साथ अधिकधिक प्रयोग कर सकते हैं। वर्षा के मौसम में शिवाम्बु की मात्रा सर्दी की अपेक्षा थोड़ी कम तथा गर्मी की मौसम में तथा पित्त प्रकृति वालों को शिवाम्बु का पान अपेक्षाकृत कम करना चाहिए। चिड़चिड़े अथवा क्रोधी स्वभाव वालों तथा अधिक शारीरिक श्रम करने वाले व्यक्तियों को शान्त, सुस्त अथवा आलसी व्यक्तियों की अपेक्षा शिवाम्बु पान कम करना चाहिए। जो व्यक्ति दुर्व्यसन से ग्रसित हैं, अथवा किसी प्रकार की दवा ले रहा है अथवा जिसका खानपान सात्त्विक नहीं है, उसको शिवाम्बु का अधिक सेवन करना चाहिए, ताकि थोड़े समय में ही उसके दुर्व्यसन छूट जाते हैं, दवा बन्द हो जाती है तथा सात्त्विक खाने के प्रति आकर्षण बढ़ने लगता है। इसी प्रकार जिनके शरीर में

शेष पृष्ठ 11 पर

कन्याएँ कितनी महिमामयी?

कन्याएँ कितनी महिमामयी जो संवारती दो कुलों को।
कन्याएँ कितना प्यारा धन, जो न रुचता बस दुर्कुलों को।।
दुर्कुल करते इनकी हत्या, लोक में आने से ही पूर्व।
वे न समझते इनकी महिमा, प्रभु ने जो दी इन्हें अपूर्व।।
दिया प्रभु ने कन्याओं को, "मातृशक्ति" का इक वरदान।
भर दिया हृदय में इनके ही, दया ममता का अनुपम दान।।

विनम्रता औ कोमलता में, क्या कोई है इनके समान?
बसते हैं बस वहीं देवता, जहाँ होता इनका सम्मान।।
जहाँ न मिलता इनको सम्मान, क्रियाएँ सभी होती निष्फल।
कोई भी देश न देख सके, कन्याओं बिना स्व-सुन्दर कल।।
हा! पुत्रियों के जन्म से ही, हम क्यों हैं डूबते शोक में?
पर होवे न इनका जन्म तो, होवे पुत्र कैसे लोक में?

यदि देवी देवकी न होती, कृष्ण-सी आत्मा कहाँ पाते?
उस योगिराज की गीता का, वह ज्ञान कहाँ से हम पाते?
यदि जीजाबाई ना होती, क्या वीर शिवाजी हम पाते?
यदि लक्ष्मीबाई ना होती, 'मर्दाना' शब्द कहाँ पाते?
आदर्श माता ने ही एक, था दिया हमें वह दयानन्द।
जिसने वैदिक शिक्षाओं से, दिया जन-जन को सौख्यानन्द।।

वह विद्यावती ने होती यदि, मिल जाता क्या वह हमें सिंह?
इतिहास में स्वाधीनता के, है सुनाम जिसका-भगत सिंह।।
नहीं लोक में होती माता, वही राम दुलारी यदि यहाँ।
वह लालबहादुर शास्त्री-सा, वह लाल महान मिलता कहाँ?
बदलो अपनी निकृष्ट सोच, मानो अमूल्यतम कन्या को।
कन्या भ्रूण हत्या का पाप, पाओ न नष्ट कर कन्या को।।
कन्या भ्रूण हत्या करके, क्यों पाप के भागी बनते हो?
ईश्वर की न्याय-व्यवस्था में, क्यों दण्ड के भागी बनते हो?

प्रियवीर हेमाङ्गना

भारत के किसान अपने परम्परागत ज्ञान को परिमार्जित करते हुए कृषि कार्य द्वारा मिट्टी से सोना बनाने का कार्य सदियों से करते आ रहे हैं, परंतु आज पाश्चात्य कृषि शिक्षा का प्रभाव, हरित क्रांति की चकाचौंध, कृषि के मशीनीकरण, रासायनिक खाद एवं कीटनाशकों के तात्कालिक लाभों को देखकर भारतीय किसान भी कृषि के स्वावलम्बन से दूर होकर रासायनिक खेती में खाद,

अंधाधुंध उपयोग ने मृदा उर्वरकता, कृषि उत्पादकता के कारकों, उत्पाद गुणवत्ता एवं पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव डाला है। रासायनिक खेती या गहन कृषि पद्धति के विपरीत प्रभाव ने आधारीय या टिकाऊ कृषि पद्धति की ओर प्रेरित किया है क्योंकि विश्व की जनसंख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है और खाद्यान्न की आवश्यकता में भी वृद्धि होती जा रही है। रासायनिक उर्वरकों

9. भूमि की उत्पादकता में निरन्तर कमी।

उपरोक्त कारणों की वजह से आज कृषक को खेती घाटे का सौदा बनती जा रही है। आज हमारे विश्व की जनसंख्या लगभग ६ अरब है व सन २०५०

प्रभावी ढंग से उपयोग हो जिनका पुर्नउत्पादन नहीं हो सकता है।

8. भूमि की आर्थिक उपयोगिता को बनाये रखे।

5. कृषक व समाज के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाएँ।

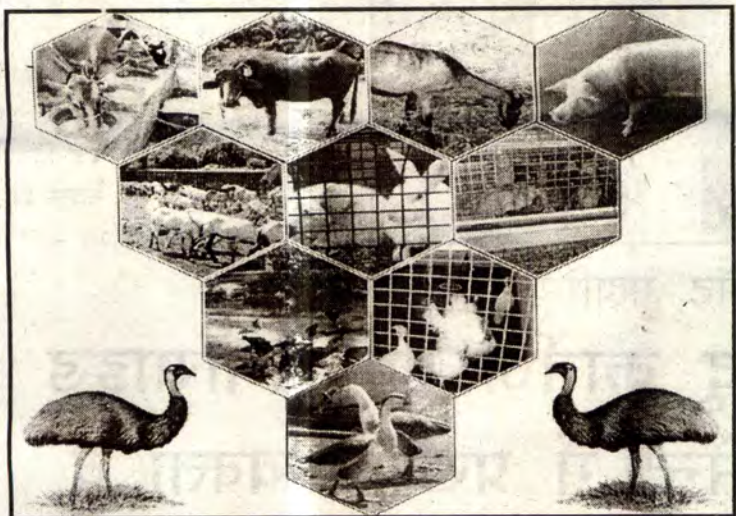
इस प्रकार से टिकाऊ

कीटनाशक आदि का उपयोग न करके उनकी जगह जैविक खाद, जैविक कीटनाशक एवं जैविक वृद्धिकारकों का उपयोग करके उत्पादन लिया जाये।

जैविक खाद बनाने के लिए पशुओं की आवश्यकता पड़ेगी

पशु पालन के बिना संभव नहीं है टिकाऊ खेती

डॉ. दुर्गेश मित्तल



उर्वरक, बीज एवं कीटनाशक दवाओं का प्रयोग करने लगे हैं। किसान अधिक उपज लेने के लिए आवश्यकता से अधिक उर्वरक एवं रासायनिक दवाओं का प्रयोग करने लगा जिससे उत्पादन में बढ़ोतरी अवश्य होती है परंतु साथ ही साथ प्रति हैक्टेयर खर्चा भी बढ़ता जा रहा है। इससे न केवल किसानों की आय में कमी देखी जा रही है बल्कि पर्यावरण पर भी विपरीत असर होता दिखाई दे रहा है। पिछले चार दशकों में कृषि रसायनों (खाद, कीटनाशक, नीडानाशक और बढ़वार कारकों) और पानी के अविवेकीय

एवं कीटनाशकों के प्रयोग से कृषि योग्य भूमि में निम्नलिखित परिणाम देखने को मिले हैं—

1. भूमि की सतह का सख्त होना।

2. लाभप्रद जीवाणुओं की संख्या में निरन्तर कमी।

3. भूमि की जलधारण क्षमता में कमी।

4. मृदा की क्षारीयता, लवणता तथा जलागम में वृद्धि।

5. भूमि में जीवाश्म की मात्रा में कमी।

6. फसलों में कीट, व्याधियों व खरपतवारों की समस्या में वृद्धि।

तक इसका ६ अरब होने का अनुमान है। लेकिन हमारी कृषि उत्पादकता बढ़ने की बजाय स्थिर हो गई है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए कृषि वैज्ञानिक आधारीय या टिकाऊ खेती करने पर जोर दे रहे हैं।

टिकाऊ खेती से तात्पर्य फसल एवं पशुपालन उत्पादन के एकीकरण तंत्र से है। जो लम्बे समय तक निम्न बातें पूर्ण कर सके—

1. मनुष्य के भोजन की पूर्ति कर सके।

2. वातावरण की गुणवत्ता एवं प्राकृतिक संसाधनों को बचाये।

3. उन सभी संसाधनों का

खेती में वह सभी बातें समाहित हैं जिससे वातावरण सुधरे, आर्थिक लाभ हो एवं समाज में समानता आए। यहाँ पशुपालन की टिकाऊ खेती में बराबर की हिस्सेदारी है क्योंकि पशुओं की कृषि में आर्थिक उपयोगिता है व साथ ही ये चारागाह एवं फसलों के अवशेषों आदि को मनुष्य के खाने योग्य बनाने में मदद करते हैं। ये पोषक तत्वों का चक्र चलाने में मदद करते हैं एवं मृदा की उर्वरता को बनाए रखने में मदद करते हैं।

टिकाऊ खेती का सबसे उत्तम उपाय है जैविक खेती। जैविक खेती से तात्पर्य है कि खेती में रासायनिक खाद,

क्योंकि पशुओं से ही गोबर, मलमूत्र आदि प्राप्त होंगे। इसके अतिरिक्त मुर्गी खाद भी भूमि की उर्वराशक्ति को बढ़ाने में काफी मदद करती है, क्योंकि मुर्गी खाद में लगभग २० प्रतिशत प्रोटीन पाई जाती है। जिससे इस खाद में नाइट्रोजन की मात्रा अधिकतम लगभग ३ प्रतिशत व फास्फोरस एवं पोटाश क्रमशः २-२ प्रतिशत होती है। वहीं सुअर के मल में नत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश क्रमशः ०.७, ०.६ एवं ०.७ प्रतिशत पाए जाते हैं।

इसके अतिरिक्त जैविक खेती में विभिन्न खादों जैसे गोबर व फसल अवशेष के मिश्रण से खाद (नाडेप या कम्पोस्ट खाद), गोबर गैस संयंत्र में उपलब्ध खाद एवं वर्मी कम्पोस्ट आदि का उपयोग होता है। वर्मी कम्पोस्ट केंचुए की मदद से बनने वाला खाद है। एक किंटल ताजा वर्मी कम्पोस्ट से भूमि को ८०० ग्राम नत्रजन, ११०० ग्राम फास्फोरस तथा ५०० ग्राम पोटेसियम प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त इसमें सूक्ष्म पोषक तत्व जैसे कि जस्ता ०.१६ प्रतिशत, तांबा ०.०६ प्रतिशत और लोहा १.३८ प्रतिशत होते हैं। इसमें कुछ पाइप हार्मोन्स और एंटीबायोटिक्स भी होते हैं जोकि फसल की अच्छी पैदावार एवं पौधों की संरक्षण को बढ़ावा देते हैं। वर्मी कम्पोस्ट की अम्लीयता क्षारीयता ६.८ से ७.२ के बीच होती है। इससे मृदा का तापमान संतुलित रहता है व मिट्टी में पानी सोखने की प्रवृत्ति बढ़ती है। इसके अतिरिक्त मुख्य उपयोग पशु का ये है कि वह जमीन जो कि अत्यंत अनउपजाऊ एवं बंजर होती है उसको भी उपजाऊ बनाने में मदद करते हैं। उपरोक्त के अलावा टिकाऊ

जिला बुलन्दशहर से हिन्दू सभा वार्ता का शुल्क मास जुलाई 2017

1.	अजय कुमार गर्ग, अंग्रेजी दवा, विक्रेता के० पी० रोड, निकट डा० विवेक अग्रवाल बुलन्दशहर (नवीनीकरण शुल्क 2017-18)	150/-
2.	श्री योगेश्वर डिग्री कॉलेज, कालन्दी मार्ग दनकोर-203201 (गौतम बुद्ध नगर) (नवीनीकरण शुल्क 2017-18)	150/-
3.	किसान एल० टी० ट्रेनिंग कॉलेज बस्ती-272001 (उ० प्र०) (आजीवन)	1200/-
4.	राजा प्रेम सिंह, शिक्षा महाविद्यालय कोटी राजा और सिंह बहराइच-271801 उ० प्र० (आजीवन)	1200/-
5.	जनता पैदा, पम्प, अनूप शहर रोड, आई० पी० डिग्री कॉलेज के सामने बुलन्दशहर (नवीनीकरण शुल्क 2017-18)	150/-

टोटल 2850/-

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

जिला बुलन्दशहर से अखिल भारत हिन्दू महासभा को प्राप्त दान सूची मास जुलाई 2017

1.	प्रकाश बैण्ड, निकट अम्बर सिनेमा मुंशी पाड़ा (मालवीय मार्ग) बुलन्दशहर (नवीनीत कुमार (पुत्र) की वर्षगाँठ पर ओ३म् प्रकाश द्वारा दान)	100/-
1.	प्रमोद कुमार पुत्र सुरेश चन्द, किराना मर्चेट, चौक बाजार, बुलन्दशहर (विक्रमी सम्वत् 2074 का कैलेण्डर भेंट करने पर दान)	100/-
1.	डा० अभिषेक कुमार सक्सेना पुत्र रमेश चन्द वैदिक द्वारा वीर सावरकर पुस्तकालय एवं वाचनालय 18/186, टीचर्स कॉलोनी बुलन्दशहर-203001 (31वीं वर्ष गाँठ पर दान)	200/-
1.	राम प्रकाश बत्रा 22/79, कन्या शिक्षा सदन के पीछे बुलन्दशहर (72वीं वर्षगाँठ पर दान)	150/-
1.	स्वर्गीय श्री मती संतोष गुलाटी की द्वितीय पुण्य तिथि पर दान द्वारा इन्द्र देव गुलाटी बुलन्दशहर	1000/-
1.	सुशील कुमार गौड़ 62/17, ज्ञान लोक कॉलोनी, गली नं० 2, टीचर्स कॉलोनी रोड बुलन्दशहर (सूरज पुत्र की 24वीं वर्षगाँठ पर दान)	351/-

टोटल 1901/-

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

शेष पृष्ठ 10 पर

(पिछले अंक का शेष)

एडमण्ड बर्क ने एक रोचक टिप्पणी की थी—हम कभी भी नहीं मानेंगे कि वारेन हेस्टिंग्स एक शेर था या चीता जैसा था। हम यह अवश्य जरूर कहना चाहेंगे कि वह मात्र एक नेवला या चूहा था। अवध और झाँसी के अकल्पनीय अत्याचारों की शृंखला में उसका सीधा लालची हाथ था। कार्नवालिस ने तो पराजित किए हुए लोगों को जिस तरह पदाक्रान्त व अपमानित किया उसका आधुनिक इतिहास में दूसरा उदाहरण मिलना मुश्किल है। भारत व हिन्दुओं के प्रति असीम सहानुभूति प्रदर्शन के लिए बौद्धिक मनःस्तर के अनोखे रूप का दूसरे वैश्विक मुद्दों पर वे तालमेल नहीं कर सके

बर्क! पर तीसरा ब्रिटिश बर्क उनके सारे जीवन पर हावी था।

वैसे बर्क ने वारेन हेस्टिंग्स के लिए जो भी कुछ लिखा हो, आधुनिक इतिहास के अनेक ग्रंथों में हेस्टिंग्स की विक्षिप्तता से भरे निर्णयों की चर्चा होती रही है। एक बार अचानक उन्होंने अपने निजी सचिव मारखम को सूचना दी कि कलकत्ते में ही रहने वाले वायसराय की काउंसिल के सदस्य फिलिप फ्रांसिस ने उन्हें आमंत्रित किया है और उन्हें चुनौती दी है कि वे उनसे द्वन्द्व युद्ध तलवारबाजी से करें। जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया है क्योंकि फिलिप फ्रांसिस को इंग्लैंड से उन्हें इसलिए भेज दिया गया है कि उनकी नीतियों को असफल

पिस्तौल से उन्होंने दो बार गोली चलाई थी पर फ्रांसिस ने पहले कभी किसी पिस्तौल को ही नहीं चलाया था। रात हो गई थी पर उस लड़ाई के कुछ नियम भी नहीं बने थे। फ्रांसिस द्वारा चलाई



की काउंसिल में उसे बहुमत के कारण सारी नेटिव हिन्दूज के विरुद्ध अत्याचारों के प्रकरण सामने आए उसके लिए उन्होंने जिस पैसा एकत्र करने वाली दक्ष नीतियों को लार्ड क्लाइव ने ईस्ट

कार्नवालिस ने १७८६ में अपने 'परमानेंट सैटलमेंट' अधिनियम में नमक उत्पादकों को शुल्क में छूट दी थी तब ईस्ट इंडिया कम्पनी के वरिष्ठ अधिकारियों को भी चिंता में डाल दिया था। कम्पनी के समुद्री मार्ग से किए व्यापार में बदलाव से कम्पनी में हड़कम्प मच गई थी। यह तथ्य विस्तार से बंगाल के 'स्टेट्समैन' व लखनऊ के 'पायनियर' नामक अंग्रेजों के प्रमुख दैनिक अंग्रेजी पत्रों के उस समय के अंकों में विस्तार से उल्लिखित है। साथ में वे यह भी लिखते थे कि 'कांग्रेस को अंग्रेजों को अपना अध्यक्ष बनाने में या उसकी हर नीति विनियक विमर्श पर भाग लेने का यह सबसे बड़ा लाभ था कि वे सर्वोच्च ब्रिटिश

वारेन हेस्टिंग्स व लार्ड कार्नवालिस पर 'इम्पीचमेंट' महाभियोग के दौरान

हिन्दू होलोकास्ट, हिन्दू नरसंहार, हिन्दू कार्नेज एवं जेनोसाइड आधुनिक इतिहास में ब्रिटिश पार्लियामेन्ट में प्रख्यात वक्ता व सदस्य एडमण्ड बर्क ने पहली बार १७८८ में ये शब्द प्रस्तुत किये

थे। यह भी आज भी योरोपीय इतिहासकार मानते हैं। फ्रांस की राज्य क्रांति पर उनके द्वारा प्रणीत ग्रंथ 'रिप्लेक्शन्स ऑन द रिवोल्यूशन इन फ्रांस' आज भी एक सन्दर्भ ग्रंथ माना जाता है जहाँ वे राजशाही से सहानुभूति रखने वाले प्रतीत होते हैं और लुई १६वें व मेरी एन्टानेट के गिलोटीन द्वारा जेकोबियन क्रान्तिकारियों ने जब सिर काटा था उसका भी समर्थन नहीं किया था। उनका विरोधाभासी जीवन चरित्र कुछ भी हो पर भारतीयों के प्रति उनकी अथाह सहिष्णुता और कैथोलिक विरोध उनके सारे जीवनकाल के दो ध्रुव थे।

एडमण्ड बर्क ने अपने व्यंग लेखन में भी अंग्रेज भारत को जिस तरह देखते थे, उस पर भी प्रहार किया था। उनके अनुसार भारत में अंग्रेज तट पर खड़े उन जहाजों पर चील-कौवों की तरह से दूर रहकर भारत के कचरे की सफाई का दावा करते थे पर यहाँ की लूट के सामान को इंग्लैंड में स्थित अपने राजकीय आवासों को सजाने में लगाते थे। उनके अलग-अलग तीन विषयों की रुचियों के कारण यह भी कहा जाता है कि उनका व्यक्तित्व त्रियामी था। एक भारतीय बर्क थे, दूसरे अमेरिकी व तीसरे फ्रेंच

किया जाए और बंगाल को नष्ट किया जाए। वे उससे दो हाथ करना चाहते हैं और मर भी सकते हैं। उस समय भारत में ब्रिटिश राजधानी कलकत्ते में हेस्टिंग्स पौर्वात्य साम्राज्य (ओरिएन्टल एम्पायर) का गढ़ स्थापित करने के सपने देख रहे थे। यहाँ तक कि इस निर्णायक द्वन्द्व के पहले हेस्टिंग्स ने अपनी 'विल' भी लिख डाली कि यदि वे मर गए तो क्या किया जाना चाहिए। भारत में ब्रिटिश शासन का भाग्य अचानक एक निर्णायक मोड़ व कगार पर आ खड़ा हुआ था। उसी समय इन्दौर के होल्कर नई सीमाएँ बढ़ाना चाहते थे और ग्वालियर के सिन्धिया फ्रांसीसी अफसरों की सेना में नियुक्ति कर रहे थे। बंगाल के अन्य हिस्सों में भी एक तूफान उठने के पहले जैसी शांति थी। इस 'डुएल' से एक रात पहले बंगाल सेना के कर्नल पियर्स को हेस्टिंग्स ने अपने बाद अगला गवर्नर जनरल नियुक्त कर दिया था। अलीपुर के नजदीक कलकत्ता का बेलवे डियरे गार्डन था जहाँ पर हेस्टिंग्स का उपनगरीय आवास भी था। गाँवों से भीड़ एकत्र हो चुकी थी। हेस्टिंग्स द्वारा बाद में लिखे अपने मित्र लारेन्स सलिवेन को एक पत्र से ज्ञात होता है कि यद्यपि एक

हरिकृष्ण निगम

गोलियों का निशाना बहक रहा था, वह लड़खड़ाया और गिर भी गया। उसके कंधे पर गोली लगी पर वह उठा और चिल्लाया कि हेस्टिंग्स की जीत हुई। फ्रांसिस को डॉक्टर के पास ले जाया गया और हताश होकर उसने हार मान ली। यह घटना सन १७८० की थी। फिर ३ दिसम्बर १७८६ को ईस्ट इंडिया कम्पनी के 'फॉक्स' नामक जहाज में गंगा से होते हुए फिलिप फ्रांसिस लौट गया। यह ब्रिटिश साम्राज्य के इतिहास में महत्वपूर्ण तिथि थी क्योंकि हेस्टिंग्स के कार्यकाल के एक युग का अंत व दूसरे युग का प्रारंभ माना जाता है। वायसराय

इंडिया कम्पनी में जन्म दिया था जिससे उसके स्वामियों ने लाभों के एकाधिकार को संगठित डकैतियों के रूप में परिवर्तित कर दिया था उससे सभी अपने वेतन के स्थान पर करोड़ों रुपयों के निजी भागीदार बने थे। सन १७७२ में वारेन हेस्टिंग्स के गवर्नर जनरल के रूप में आगमन के साथ बंगाल व बिहार की दीवानी सोने का अंडा निजी तौर पर बन रही थी। फिलिप फ्रांसिस का सारा गिरोह हेस्टिंग्स के विरोध में इसी को रोकने के लिए भेजा गया था पर उसे मुँह की खानी पड़ी थी। हेस्टिंग्स के क्रूर विस्तारवाद ने भारत को अन्दर से इतना खोखला कर दिया था कि जब लार्ड

अधिकारियों के हर निर्णय के अनुमोदन के लिए आश्वस्त रहते थे। अक्टूबर १४, १८६० के 'कांशस कांग्रेस' शीर्षक स्टेट्समैन के सम्पादकीय में यहाँ तक लिखा गया कि देश का हर कांग्रेसी अंग्रेजों के सही निर्णयों का बेझिझक अनुमोदन करता था।

हिन्दुओं के साथ घोर अन्याय की त्रासदी की कलुष कथा हमें एडमण्ड बर्क जैसे इंग्लैंड की पार्लियामेंट का एक युगपुरुष कड़वे, दो टूक शब्दों में बताए और उसकी अभिलेखिता कहानी को हम स्वयं अनदेखा कर उस पर पर्दा डालें, इससे अधिक राष्ट्रीय लज्जा का क्या विषय हो सकता है।

नगर आर्य समाज का स्थापना दिवस

बुलन्दशहर। २४ जुलाई नगर आर्य समाज के स्थापना दिवस की ५१ वीं वर्षगांठ है। स्थापना प्रेम नगर में हुई थी। ७ जून २०१५ से साप्ताहिक हवन व सत्संग टाकुर मदन पाल सिंह की कोठी पर १/४६१ लक्ष्मी नगर में प्रत्येक रविवार को प्रातः ८ बजे से नियमित रूप से हो रहा है। आप भी आया करें। आर्यों ने इसकी स्थापना की थी जिनके नाम हैं— टीका राम सरोज— शिवनन्दन दास आर्य—राधे ग्याम जिन्दल—इन्द्र देव गुलाटी— कृपा शंकर, स्टाम्प विक्रेता— नारायण दत्त शर्मा तथा मोहनलाल शर्मा। ६ आर्यों का स्वर्गवास हो गया है केवल इन्द्र देव गुलाटी जीवित हैं।

शैलेन्द्र सत्यव्रत (जौहरी) आर्य समाज के मंत्री बने।

बुलन्दशहर। २० जुलाई १२१ वर्ष पुरानी आर्य समाज चौक बाजार के वार्षिक चुनाव में शैलेन्द्र सत्यव्रत (जौहरी) एडवोकेट को मंत्री चुना गया। उन्हें वैदिक धर्म की बहुत अच्छी जानकारी है। वे शास्त्रा करने की योग्यता रखते हैं। वे भविष्य में प्रान्तीय सभा के मंत्री भी बन सकते हैं। राजेश गोयल को पुनः कोषाध्यक्ष चुना गया। विवाह करने की जिम्मेदारी गोयल जी ही निभाएंगे।

कश्मीर का भारत में विलय :

२६ अक्टूबर १९४७ को भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम १९४७ (इंडियन इंडिपेंडेंस एक्ट १९४७) के अनुसार जिस विलय पत्र पर कश्मीर के राजा हरीसिंह ने हस्ताक्षर किये थे वह पूर्णतः बिना किसी शर्त के था। इस अधिनियम के अनुसार किसी भी राज्य के भारत में विलय के निर्णय का संपूर्ण अधिकार केवल वहां के शासक का ही होता था। इस पर भी राजा हरीसिंह ने यह स्पष्ट कर दिया था कि इस विलय पत्र में कोई भी परिवर्तन या संशोधन हो तो उनकी स्वीकृति आवश्यक होगी। भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड माउंटबेटन ने २७ अक्टूबर १९४७ को उस विलय पत्र पर अपने हस्ताक्षर करके उसी रूप में उसे स्वीकार किया था। लेकिन माउंटबेटन ने जम्मू-कश्मीर पर पाकिस्तान के कबाईलियों व सेना ने आक्रमण कर देने के कारण वहां की असामान्य स्थिति का अनुचित लाभ उठाते हुए अपनी कुटिल चाल चलते हुए राजा हरीसिंह को एक अलग पत्र द्वारा यह बताया कि भविष्य में जब कश्मीर राज्य की स्थिति सामान्य हो जायेगी और आक्रमणकारी निकाल दिए जाएंगे तो इस विलय पर वहां की जनता से राय ली जायेगी। पर इस पत्र का कोई वैधानिक अधिकार नहीं था क्योंकि इस प्रकार के सशर्त विलय का भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम में कोई प्रावधान नहीं था। ध्यान रहें देश के शेष अन्य समस्त ५६८ राज्यों के समान ही जम्मू-कश्मीर का बिना शर्त भारत में विलय हुआ था। अतः जम्मू-कश्मीर का भारत में विलय अन्य राज्यों के समान ही अविवादित, बिना शर्त व पूर्ण था। आज जो लोग अपनी कुटिल राजनीति के कारण देश को भ्रमित कर रहे हैं वो भारत विरोधी ही हो सकते हैं।

विभाजनकारी अनुच्छेद ३७०

: भारतीय संविधान का अनुच्छेद ३७० कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा देता है। जिसके अनुसार रक्षा, विदेश व संचार नीति जैसे महत्वपूर्ण विषयों को छोड़कर बाकी सभी विषयों पर राज्य सरकार की सहमति आवश्यक होगी। कश्मीर के लोग भारत के किसी भी भाग में भूमि खरीद सकते हैं, चुनाव लड़ सकते हैं परंतु शेष भारत के लोग वहां न तो भूमि खरीद सकते हैं और न ही वहां कोई चुनाव लड़ सकते हैं।

जम्मू-कश्मीर के लोग भारत के नागरिक हैं, परंतु शेष भारत के लोग इस राज्य के नागरिक नहीं माने जाते। इससे भारत व कश्मीर के नागरिकों के विरुद्ध आपसी भेदभाव बढ़ता जा रहा है। यही कारण है कि भारत विरोधी व अलगाववादी मानसिकता को प्रोत्साहन भी मिलता आ रहा है। यहां के लोगों को एक प्रकार से राज्य व केंद्र की दोहरी नागरिकता मिली हुई है। इस अनुच्छेद के कारण देश के १३४ कानून जम्मू-कश्मीर में लागू नहीं हो पा रहे हैं। यदि ये कानून शेष देश के नागरिकों के हितों पर चोट नहीं करते तो जम्मू-कश्मीर

भारतीय ध्वज व संविधान का अपमान करने वालों पर कठोर कार्यवाही भी नहीं हो पाती। सन् २००२ में पूरे देश में लोकसभा क्षेत्रों का पुनर्गठन हुआ था पर इस विवादित अनुच्छेद के चलते यह जम्मू-कश्मीर में नहीं हो सका। क्या ऐसे में भारतीय संसद की भूमिका वहां अप्रसंगिक नहीं हो गई? अतः यह विचार करना होगा कि अनुच्छेद ३७० के होते वहां के सामान्य नागरिकों को क्या लाभ हुआ और अगर देश के अन्य कानून वहां लागू होते तो उन्हें कितना लाभ होता?

वास्तव में जम्मू-कश्मीर से सम्बंधित भारत के संविधान में

समान अधिकार हो, पर भारत और भारतीयों को तुम कश्मीर में कोई अधिकार देना नहीं चाहते। मैं भारत का कानून मंत्री हूँ और मैं अपने देश के साथ इस प्रकार की धोखाधड़ी और विश्वासघात में शामिल नहीं हो सकता। इतने विरोध के उपरान्त भी जम्मू-कश्मीर के एक विशेष समुदाय (मुस्लिम) व शेख अब्दुल्ला को प्रसन्न रखने के लिये इस विभाजनकारी अनुच्छेद को नेहरु जी ने स्वीकार करके देश में धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र और संघीय ढांचे के स्वरूप को अपनी अड़ियल व अधिनायकवादी प्रवृत्ति के कारण कश्मीर का बिना

पूर्व मुख्यमंत्री जी.एम. सादिक ने भी सार्वजनिक रूप से इसको समाप्त करने को कहा था। कश्मीर की संविधान सभा के १९५७ में समाप्त होते ही इस अनुच्छेद की प्रसंगिकता शेष नहीं रहती और वैसे भी इस सभा के निरस्त होने के बाद इसके सारे अधिकार लोकसभा को दिये गये हैं। अतः जो लोग जम्मू कश्मीर की संविधान सभा को पुनर्गठित करने की बात करते हैं वह बिल्कुल निराधार हैं। संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद ३७० के शीर्षक में जम्मू-कश्मीर के बारे में अस्थायी उपबंध लिखकर इसे निहायत अस्थायी व्यवस्था के रूप में लिखा था। विधि-विशेषज्ञों के अनुसार इसके उपखंड (३) में इसको समाप्त करने की साफ साफ व्यवस्था है कि इसे संविधान से खारिज करने के लिए लोकसभा की किसी बैठक की आवश्यकता नहीं है। राष्ट्रपति एक साधारण उद्घोषणा द्वारा इसे समाप्त कर सकते हैं। प्रसिद्ध विधिवेत्ता डॉ० सुब्रमण्यम स्वामी ने भी यह स्पष्ट बताया था कि केंद्रीय मंत्रीमंडल भी अगर इस अस्थायी अनुच्छेद ३७० को समाप्त करने की विधिवत अनुशंसा राष्ट्रपति को भेजें तो वह उसे स्वीकार करके इस दशकों पुरानी विवादित समस्या का निदान करने में सक्षम है। इस विवादकारी अनुच्छेद के कारण ही पाकिस्तान जम्मू-कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग नहीं मानता। अतः इसको हटाने की मांग को सांप्रदायिक रंग देना दुखद है। बल्की वास्तविकता यह है कि इस अनुच्छेद के हटने से जम्मू-कश्मीर के भारत में पूर्ण विलय सम्बन्धित सभी भ्रम दूर हो जायेंगे। वैसे भी जम्मू-कश्मीर के दोहरे स्तर को समाप्त करके मूलधारा से जोड़कर सशक्त भारत के निर्माण के लिये इसको हटाना अति आवश्यक है।

कश्मीर का बिना शर्त भारत में पूर्ण विलय, फिर अनुच्छेद ३७० का क्या औचित्य

विनोद कुमार सर्वोदय

के नागरिकों के लिये कैसे हानिकारक हो सकते हैं? इस अनुच्छेद के कारण वहां का क्षेत्रीय

अनुच्छेद ३७० जोड़ने का विरोध सभी राजनीतिक दलों, संविधान सभा व कांग्रेस कार्य समिति के



संतुलन बिगड़ रहा है क्योंकि जम्मू व लद्दाख के लोगों से सरकारी नौकरियों व विकास कार्यों में भेदभाव करते हुए कश्मीर घाटी को प्रमुखता दी जाती आ रही है। इसके रहते यहां की अधिकांश हिन्दू जातियां जो पिछड़ी हुई हैं को भारतीय संविधान के अनेक प्रावधानों के लागू न होने कारण आरक्षण भी नहीं मिलता। जिससे इन हिन्दुओं के और अधिक पिछड़ने से गरीबों की संख्या भी बढ़ती जा रही है। इस अनुच्छेद का अधिकांश लाभ सामान्य जनता को नहीं केवल वहां के सत्ता धारियों व अलगाववादियों को ही मिल रहा है। इसके कारण अलगाववादियों, आतंकियों एवं

सभी सदस्यों एवं जम्मू-कश्मीर के चारों प्रतिनिधियों ने भी किया था। संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ० भीमराव अंबेडकर ने भी इस अनुच्छेद के पक्षधर पं० जवाहरलाल नेहरु को समझाया था कि इस प्रकार के विशेष दर्जे से कश्मीर घाटी में भारतीय राष्ट्रवाद की पकड़ समाप्त हो जायेगी और भविष्य में कश्मीर के युवा अलगाववाद के रास्ते पर चलकर पाकिस्तान की गोद में चले जायेंगे। डॉ० अंबेडकर ने अनुच्छेद ३७० की फिरकापरस्ती जिद्द पर अड़े शेख अब्दुल्ला से भी स्पष्ट कहा था तुम यह तो चाहते हो कि भारत कश्मीर की रक्षा करें, कश्मीरियों को पूरे भारत में

शर्त भारत में पूर्ण विलय, फिर अनुच्छेद ३७० का क्या औचित्य कश्मीर का बिना शर्त भारत में पूर्ण विलय, फिर अनुच्छेद ३७० का क्या औचित्य बिगाड़ने का कार्य किया था।

अनुच्छेद ३७० को हटाना कठिन नहीं : उस समय ऐसा भी कहा गया था कि पाकिस्तानी आक्रमण की पृष्ठभूमि में शेख अब्दुल्ला की कुटिल सलाह पर इस विशेष अनुच्छेद का प्रावधान नेहरु जी ने स्वीकारा, जिससे जनमत संग्रह की स्थिति में स्थानीय नेता होने के कारण शेख अब्दुल्ला भारत के पक्ष में रहेगा। शेख अब्दुल्ला ने भी यह माना था कि यह अनुच्छेद अपरिवर्तनीय नहीं है। जम्मू-कश्मीर के एक

दान/सहयोग द्वारा इन्द्रदेव, बुलन्दशहर**माह श्रावण विक्रमी सम्वत् २०७४**

1.	दो सगे-सम्बन्धियों को दिए	4000/-
2.	अ० भा० हिन्दू महासभा, नई दिल्ली	1901/-
3.	हिन्दू सभा वार्ता, नई दिल्ली	2850/-
4.	अमर उजाला फाउंडेशन एसिड विक्टिम एमपावरमेंट फण्ड, नौएडा	1000/-
5.	राष्ट्रीय कोहिनूर एटा	1000/-
6.	दि मारल, कानपुर	500/-
टोटल		11251/-

इन्द्रदेव गुलाटी, संस्थापक, सावरकरवाद प्रचार सभा, बुलन्दशहर

(पिछले अंक का शेष)

अरबी बनाम गैर-अरबी
मुसलमान

पैगम्बर ने व्यक्तिगत भक्ति की अनिवार्यता को इस्लामी इमारत का आधारभूत स्तम्भ बनाया। उदाहरण के लिए-पैगम्बर पर ईमान लाए बिना अल्लाह पर ईमान लाना बिल्कुल बेकार है। पैगम्बर ने ईमान वालों के लिए, चाहे वे कहीं भी रहते हों, स्वयं अपने को 'व्यवहार का आदर्श' (उसवा-ए-हसीना) प्रस्तुत करके अन्य देशों के लिए अरब राष्ट्रीयता को श्रेष्ठता का आधार बना दिया। (कुरान 33:29 पृ. ७४८)

मुहम्मद ने उमर के समक्ष यह घोषणा की- "मैं यहूदियों और ईसाइयों को अरब प्रायद्वीप से निकाल बाहर करूंगा। यहाँ मुसलमानों के अतिरिक्त कोई नहीं रहेगा।" (सही मुस्लिम ४३६६)

पैगम्बर का यह दृढ़ कथन कि - "विश्व के सभी मुसलमान एक राष्ट्र (कौम) हैं और गैर-मुसलमान दूसरा राष्ट्र"। इस नारे ने विदेशी मुसलमानों की अरबों के साथ एकता को बढ़ावा दिया और विदेशी (गैर-अरबी जैसे भारतीय) मुसलमानों की अपनी मातृभूमि के प्रति निष्ठा कम या समाप्त हो गई। इस प्रकार पैगम्बर मुहम्मद ने अपने लोगों का नेतृत्व विदेशी राष्ट्रों के मुसलमानों पर सदैव के लिए स्थापित कर दिया।

उन्होंने अरेबिया और विदेशी मुस्लिम देशों के बीच समानता के सम्बंध स्थापित कर दिए जैसे कि किसी जलते हुए दीपक और पतंगे के बीच होते हैं। ये पतंगे दीपक की लौ में बिना किसी जोर-जबरदस्ती के स्वयं मरने को बैचेन रहते हैं।

इस दैवी साम्राज्यवाद की इतिहास में कोई बराबरी नहीं है। भारत के मुसलमानों में जिसकी संख्या लगभग २५ करोड़ है, में राष्ट्रवाद की अवधारणा की पूरी तरह से कमी है। वे अपनी मातृभूमि के लिए सच्चा प्यार और सम्मान न करने के कारण अपने ही देश में शरणार्थी हैं। राष्ट्रीय सचेतना का लोगों के साथ वैसा ही सम्बंध होता है जैसा कि शरीर का रीढ़ की हड्डी से, इसलिए इन लोगों का लगातार भटकते रहना स्वाभाविक है, जब तक कि वे यह महसूस न करें कि

उनका देश वहाँ है, जहाँ वे जन्में हैं न कि अरेबिया।

कोई भी देख सकता है कि अरबी लोग इस्लाम के अनुयायी के रूप में दिखने की जगह वे अपने को स्वामी के रूप में देखते हैं।

यह स्वाभाविक है कि जब किसी आदमी को सुख नहीं मिलता है तो वह उसके लिए सपने देखता है, इसलिए अपनी निराशा आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए अगली मृत्योत्तर दुनिया की

चाहिए।

इस्लाम में 'मानवता-प्रेम' एक
ढोंगप्रसिद्ध मुस्लिम विद्वान
अनवर शेख के अनुसार-

"इस्लाम में मानव-प्रेम का उल्लेख तो एक ढोंग है। दूसरों के प्रति घृणा ही इस्लाम का मूल आधार है। इस्लाम के अनुसार मुसलमानों को छोड़कर बाकी सब सदा के लिए घोर नरक में जायेंगे। इस्लाम का ध्येय मुसलमानों और दूसरों में संघर्ष है जो कार्ल मार्क्स के



हिन्दू अस्तित्व, संकट और समाधान

प्रो० ए०पी० सारस्वत

ओर देखता है। क्योंकि पैगम्बर के पास 'जन्नत' की चाबी है ऐसे लोग पैगम्बर के और भी अधिक कट्टर अनुयायी हो जाते हैं और जन्नत पाने के अधिकारी होने के लिए मुहम्मद के नाम पर कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं।

यह राष्ट्रीय संघर्ष ही है जो अस्तित्व, सम्मान और श्रेष्ठता पाने के लिए किया जाता है और वही लोगों को महान बनाता है। गैर-अरबीय मुसलमानों की राष्ट्रीय भावनाओं को नष्ट कर देने के परिणामस्वरूप इस्लाम ने सम्यता के एशियाई केन्द्रों जैसे-मिस्र, ईरान और भारत को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया।

जैसे-जैसे इस्लाम का प्रभाव बढ़ने लगा, भारत के ६ मार्न्तरित मुसलमान भारतीय राष्ट्रीयता से विमुख हो गए। इस्लाम धर्म की शक्ति के प्रभाव में यह बहाना करने लगे कि उनके पूर्वजों का देश, अब उनके लिए 'दार-उल-हरब' यानी एक प्रकार की 'युद्धभूमि' हो गई है।

यूरोप, अमरिका आदि पश्चिमी देशों में पल रहे अठ्ठाईस मुस्लिम बच्चों के मन में वहाँ की राष्ट्रीयता के प्रति कोई प्रेम नहीं है। यदि उनका देश इतना ही बुरा है, तो फिर मुसलमान यहाँ क्यों आते हैं? यदि वह देश, जहाँ से वे आव्रजित हुए, इतने श्रेष्ठ थे तो उन्हें अपने देश को छोड़ना नहीं

सामाजिक संघर्ष के तत्त्व से कहीं अधिक अनिष्टकारी है। क्योंकि इस्लाम का ध्येय अरबों की महत्ता स्थापित करना है इसलिए इस्लाम को एक 'मत' न कहकर "अरब राष्ट्रीय आंदोलन" कहना चाहिए। "इतिहास गवाह है कि इस्लाम विस्तार की अपनी योजना के कार्यान्वयन में किसी प्रकार की ढील नहीं देता है। उससे जितनी सहिष्णुता, उदारता, विनम्रता और सद्भावना का व्यवहार करता है। उनकी कार्यवाही मजहबी उन्माद में होती है, जहाँ दूसरों के विचारों या भावनाओं का आदर नहीं किया जाता, वरन् उन्हें कुचला जाता है। कुरान, हदीस और पैगम्बर के जीवन में मेल से प्राप्त आदेशों और शिक्षाओं का अनुसरण ही इस्लाम है। मुसलमान इस्लाम में बने रहकर उनका त्याग नहीं कर सकते हैं और उनके पालन का सीधा अर्थ है- 'युद्ध, विध्वंस और अशान्ति'। वे कुरान को अल्लाह का पैगाम समझते हैं, जिसका एक शब्द भी बदला नहीं जा सकता है।"

डॉ० बी० आर० अम्बेडकर ने अपनी पुस्तक 'पाकिस्तान और भारत का विभाजन' में लिखा है-

"इस्लाम एक बंद निकाय की तरह है, मुसलमानों और गैर-मुसलमानों के बीच यह जो भेद करता है, वह बिल्कुल मूर्त और स्पष्ट है। इस्लाम का भ्रातभाव मानवता का भ्रातभाव नहीं है,

मुसलमानों का मुसलमानों से ही भ्रातत्व है। यह बंधुत्व है, परंतु इसका लाभ अपने ही निकाय के लोगों तक सीमित है और जो इस निकरस से बाहर हैं, उनके लिये इसमें सिर्फ घृणा और शत्रुता ही है। मुसलमानों की निष्ठा जिस देश में वे रहते हैं, उसके प्रति नहीं होती, बल्कि वह उस धार्मिक विश्वास पर निर्भर करती है, जिसका कि वे एक हिस्सा है। जहाँ कहीं इस्लाम का शासन है, वहीं उसका विश्वास है। दूसरे शब्दों में, इस्लाम एक मुसलमान को "भारत को अपनी मातृभूमि और हिन्दुओं को अपना निकट सम्बंधी" मानने की इजाजत नहीं देता।" इस प्रकार कोई भी समझ सकता है कि इस्लाम एक दयालुता का 'मजहब' नहीं है। "इस्लाम" मुजाहिदीन् (अल्लाह के योद्धाओं) को युद्ध के लिए तैयार रखने और युद्ध के अवसरों को बनाए रखने के लिए गैर-मुसलमानों के प्रति घृणा करता है।

इस्लाम में मुस्लिमों के
विशेषाधिकार

एक हदीस कहती है-
"एक मुसलमान गुस्से में बिना किसी मुआवजा या क्षतिपूर्ति के भय के किसी गैर-मुस्लिम को थपड़ मार सकता है। इसी प्रकार एक मुसलमान को किसी गैर-मुसलमान की हत्या के जुर्म में जजा नहीं दी जा सकती है।" (मुस्लिम ४: २८३ पृ. १८०)
"जजिया कर वसूल करने वाले

मुसलमान को अधिकार है कि वह हिन्दू के मुँह में थूक सकता है। हिन्दू को चाहिए कि यदि कर वसूलने वाला यदि चाहता है तो वह बिना किसी हिचकिचाहट के अपना मुँह खोल दे। (जियाउद्दीन बारानी, तारीखे फिरोजशाही, सैयद अथर अब्बास रिजवी, हिन्दी अनुवाद-खिलजी कालीन भारत, पृ. ७०)

जजिया कर देने वाले हिन्दू निम्न शर्तों का पालन करने पर ही जीवित रह सकते थे-

१. मुसलमान यात्रियों को हिन्दू मन्दिरों में ठहरने का अधिकार होगा।

२. मुसलमानों को किसी हिन्दू के घर में ३ दिनों तक ठहरने का तो अधिकार रहेगा ही, यदि वह बीमार हो जाता है तो अधिक दिनों तक भी ठहर सकता है और इन ३ दिनों में उसके द्वारा किया गया कोई काम पाप नहीं समझा जायेगा।

३. मुसलमानों को गैर-मुसलमानों की व्यक्तिगत बैठकों में भाग लेने का हक होगा।

४. गैर-मुसलमानों को हर मुसलमान के प्रति सम्मान प्रगट करना होगा।

५. जीने और लगाम के साथ सिर्फ मुसलमान ही घुड़सवारी कर सकेंगे।

६. सिर्फ मुसलमान ही अपने साथ हथियार रख सकेंगे।

७. केवल मुसलमान ही खुले में शराब बेच व पी सकते हैं।

८. विशिष्ट प्रकार के वस्त्र पहनने का अधिकार केवल मुसलमानों का होगा।

९. मुस्लिम गुलाम खरीदने का अधिकार केवल मुसलमानों का होगा।

१०. धार्मिक रीति-रिवाजों का सार्वजनिक रूप से मनाने और उच्च स्वर में शोक मनाने का अधिकार केवल मुसलमानों को होगा। (शेष अगले अंक में)

हुरियत कान्फ्रेंस के नेताओं की गिरफ्तारी

डॉ० कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

कश्मीर घाटी में पिछले लम्बे अरसे से पाकिस्तान ने छद्म युद्ध छेड़ रखा है। जाहिर है इस युद्ध के लिए परम्परागत तरीकों और हथियारों का तो इस्तेमाल नहीं हो सकता। इसे कुछ विशेषज्ञ हजार घाव देने वाला युद्ध भी कहते हैं। यानि शत्रु के शरीर पर एक एक कर हजार घाव कर दो ताकि वह निस्तेज हो जाए। पाकिस्तान भारत के शरीर पर हजार घाव करने के प्रयास में ही लगा हुआ है, क्योंकि आर पार की लड़ाई वह १९४७ से लेकर कारगिल युद्ध तक चार बार कर चुका है लेकिन उसमें सफल नहीं हुआ। हजार घाव करने की लड़ाई उसने कश्मीर घाटी के कुछ लोगों को भी शामिल कर लिया है। ये लोग क्षीण अल्पमत के लोग हैं लेकिन इन्होंने कश्मीर घाटी के बहुसंख्यक लोगों को एक प्रकार से बन्धक बना लिया है। बन्धक बने ये लोग कभी हुरियत कान्फ्रेंस के लोगों द्वारा जारी किए गए कैलण्डर का पीछा करते हैं, कभी किसी आतंकवादी गुट द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति को पढ़ कर ही लाल चौक सुनसान हो जाता है। बहुत ही गहरी रणनीति से भूमिगत और उनके भूमि के ऊपर विचार रहे समर्थक भय और आतंक का वातावरण बना कर कश्मीर घाटी को बन्धक बनाए हुए हैं। इस प्रकार के वातावरण में समाज विरोधी तत्व धन सम्पत्ति जुटाने और उगाहने के अभियान में जुट जाते हैं। लेकिन यह सब कुछ तब तक ही संभव है यदि सरकार अपवित्र नैक्सस को तोड़ने में असफल रहती है। अब तक भारत सरकार का तरीका किसी भी ढंग से इस अपवित्र आतंकी गठबन्धन से बातचीत करके कोई बीच का रास्ता निकालने का ही रहा है। उससे शान्ति की कुछ समय के लिए लीपापोती तो होती रहती है लेकिन अन्दर पनप रहे कीड़े नहीं मरते। आम जनता और भी ज्यादा भय ग्रस्त हो जाती है। उसको लगता है जब आतंकी गठबन्धन का सरकार कुछ नहीं बिगाड़ पाती तो हमारी क्या बिसात है। कश्मीर घाटी में पिछले तीस साल से यही हो रहा है। वहाँ के स्थानीय राजनीतिज्ञों को इस आतंकी वातावरण से असीम लाभ मिलता है। वे दिल्ली को डराते रहते हैं कि कश्मीर घाटी और दिल्ली के बीच वे ही इस नाजुक दौर में सेतु का काम कर सकते

हैं। उनके बिना कश्मीर घाटी से संवाद समाप्त हो जायेगा। इस संवाद के लोभ में उनके भ्रष्ट आचरण की ओर कोई ध्यान नहीं देता। आज कश्मीर घाटी में शेख अब्दुल्ला का कुनबा भ्रष्टाचार को लेकर इतना बदनाम है कि उनके भ्रष्ट आचरण की सुगन्ध खाने के लिए वहाँ का बच्चा बच्चा तैयार है। लेकिन आप उनके इस भ्रष्टाचार की जाँच नहीं करा सकते क्योंकि उनके अनुसार इससे घाटी की स्वायत्तता का हनन होता है। इसी स्वायत्तता की रक्षा करते करते दिल्ली ने घाटी में पाकिस्तान पोषित राक्षस को जेहलम किनारे पसरने दिया।

लेकिन लगता है कि नरेन्द्र मोदी की सरकार ने सत्ता में आने पर कश्मीर घाटी को समझने का मुहावरा बदल लिया है। पहली बार भारत सरकार ने कश्मीर घाटी में सचमुच का विधान सभा चुनाव करवा दिया। पहला चुनाव जिसमें वहाँ के लोगों को लगा कि वे अपना प्रतिनिधि केवल रस्मी तौर पर नहीं बल्कि सही अर्थों में स्वयं चुन सके। यह

अलावा कोई चारा न रहे। सरकार बन्दूक चलाए तो लाशों की गिनती बताओ और पैलेट गन चलाए तो शरीर पर लगे छरों का हिसाब किताब प्रसारित करते रहो। भारत सरकार कितने दिन यह दबाव झेल सकेगी? गिलानी का पुराना अनुभव महीना दो महीना बताता था। उसके बाद सरकार फिर आकर किसी गिलानी, खुरासानी, करमानी, हमदानी के दरवाजे पर नाक रगड़ेगी। तब फिर वही पुराना सिलसिला शुरू हो जायेगा। लेकिन नरेन्द्र मोदी की सरकार ने पाकिस्तान और कश्मीर घाटी में सक्रिय उसके आतंकी संगठनों को अलग अलग उत्तर उन्हीं की भाषा



आतंकवादियों और पाकिस्तान दोनों के लिए चौक उठने का समय था। मोदी ने बातचीत का रास्ता तो पाकिस्तान से भी खुला रखा, लेकिन बातचीत की भाषा बदल गई। अब रिरियाने या सफाई देने या माँगने की भाषा न रहकर मोटी खरी खरी सुनाने की भाषा हो गई। आतंकवादियों ने एक बार फिर बुरहान बानी के मरने के मौके का लाभ उठाकर कश्मीर बन्द और लाल चौक बन्द की पुरानी कवायद शुरू कर दी। पत्थर फेंकने का पुराना सिलसिला। जगह जगह कुछ हजार लोगों के प्रदर्शन। सेना पर हमला। नियंत्रण रेखा पर फायरिंग इत्यादि इत्यादि। लेकिन इस रणनीति का सबसे अहम हिस्सा था, पत्थर फेंकते रहो ताकि सरकार के पास कर्फ्यू लगाने के

में दिया। पाकिस्तान को उन्होंने बलोचिस्तान की चिन्ता करने के लिए कहा। बताया कि मजलूम बलोचों पर पाकिस्तान की पंजाबी सेना अत्याचार कर रही है। यह भी कहा कि जम्मू कश्मीर का जो हिस्सा पाकिस्तान के कब्जे में है वहाँ के लोग भारतीय नागरिक ही हैं। पाकिस्तान की पंजाबी सेना वहाँ भी बहुसंख्यक शिया समाज को मार रही है और पाकिस्तान से मुसलमानों को ला लाकर वहाँ बसा रही है। उसे बन्द कर देना चाहिए। गिलगित बल्तीस्तान में इससे एक बारगी तूफान आ गया। वहाँ के लोगों को लगा कि उनकी चिन्ता करने वाला भी कोई है। वहाँ भारत जिन्दाबाद के नारे लगने लगे। बलोचिस्तान के लोग आभार जताने लगे कि किसी ने तो उनकी चिन्ता की।

दूसरा उत्तर मोदी सरकार ने आतंकी संगठनों को दिया। सरकार किसी गिलानी के पास नहीं गई। यदि बात करनी होगी तो जनता के चुने हुए नुमायंदों के साथ की जायेगी। सीपीएम के कुछ लोग भाग कर गिलानी के दरवाजे तक गए भी लेकिन झल्लाए गिलानी ने उनके लिए दरवाजा खोलने से भी इन्कार कर दिया। आतंकियों ने उड़ी में सेना के शिविर पर आक्रमण किया तो भारतीय सेना ने जम्मू कश्मीर के पाकिस्तान द्वारा कब्जा किए गए इलाके के अन्दर घुस कर आतंकी शिविरों को नष्ट कर दिया। मोदी सरकार के इस कदम से तो पाकिस्तान की घरेलू राजनीति में भी भूचाल आ गया। आतंकी संगठनों को लगता था कि वे दबाव का वातावरण बना कर प्रदेश की मुख्यमंत्री को डरा लेंगे और वह डर कर सरकार से हाथ खींच लेगी तो दिल्ली और घाटी आमने सामने है, ऐसा माहौल बनाने में सहायता मिलेगी। आज तक प्रदेश में यही होता रहा है। वहाँ का मुख्यमंत्री या तो आतंकियों के आगे हथियार डाल देता था या फिर आतंकियों की भाषा में ही बोलना शुरू कर देता था। फारुक अब्दुल्ला तो अभी तक रट लगा रहे हैं कि सरकार और किसी से बात करे न करे, हुरियत कान्फ्रेंस से जरूर कर ले। दरअसल फारुक अब्दुल्ला जैसे लोग ही हैं जो घाटी में हुरियत कान्फ्रेंस जैसी तंजीमों को जिन्दा रखते हैं। लेकिन महबूबा मुफ्ती ने आतंकियों के राजनैतिक दबाव और आतंक के भय में आने से इन्कार कर दिया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि आतंकी और उनके समर्थक अपने बच्चों को तो बाकी प्रदेशों में पढ़ने के लिए भेज रहे हैं और गरीब के बच्चों को आगे करके उनका दोहन कर रहे हैं। सैयद अहमद शाह गिलानी की पोती के हाथ में पोथी और लाल चौक में जमीन पर बैठ कर सब्जी बेचने वाले के बेटे के हाथ में पत्थर।

अब पाकिस्तान की शह

पर आतंकी संगठनों ने निराशा में आकर अपनी अंतिम चाल चली है। उन्होंने घाटी में स्कूलों को बन्द करवाना या जलाना शुरू कर दिया है। उन्होंने धमकियाँ देना शुरू कर दिया हैं कि कोई बच्चा परीक्षा देने के लिए स्कूल में न जाए। जब तक पाकिस्तान के साथ मिल तर आतंकी कश्मीर घाटी को आजाद नहीं करवा लेते तब तक विद्यार्थियों को पढ़ने व परीक्षा देने जैसे गैर इस्लामी काम छोड़ने होंगे। प्राथमिकता घाटी की आजादी है न कि स्कूल की परीक्षा। लेकिन खास खास मामलों में कुछ बच्चों को परीक्षा देने की छूट भी दे दी गई। जिस स्कूल में हुरियत कान्फ्रेंस के सदस्य सैयद अहमद शाह गिलानी की पोती पढ़ती है, उस स्कूल को छेड़ा नहीं गया। ताकि गिलानी की पोती परीक्षा दे ले। आखिर बच्ची के भविष्य का सवाल है। लेकिन शेष बच्चों को स्कूल जाने से रोकना जरूरी है। उद्देश्य स्पष्ट है। गरीब का बच्चा पढ़ेगा तो सोचेगा। सोचेगा तो समझेगा भी जरूर। एक बार वह समझ गया तो गिलानियों, हमदानियों, खुरासानियों और करमानियों की दुकान बन्द नहीं हो जायेगी? पाकिस्तान और पाकिस्तान की पंजाबी सेना का स्वार्थी चेहरा भी बेनकाब हो जायेगा। लेकिन लगता है यह पाकिस्तान और आतंकी संगठनों की घाटी में अंतिम लड़ाई है जो धीरे धीरे घाटी के आम आदमी तथा बलोचिस्तान और गिलगित बल्तीस्तान के शोर में डूब जायेगी।

कश्मीर घाटी में अलगाववाद व आतंकवाद के कारणों को जानने के लिए घाटी की जनसांख्यिकी की संरचना को ध्यान में रखना होगा। दरअसल अरब-ईरान से आने वाले लोग इस कश्मीर की मिट्टी में अपनी जड़ें नहीं जमा सके। वे बीच बीच में अपना शासन स्थापित करने में तो सफल हुए लेकिन उनका

मानसिक

शेष पृष्ठ 11 पर



कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं



प्रतिष्ठा में,

श्री राजनाथ सिंह जी,
माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार
नार्थ ब्लॉक, नई दिल्ली-११०००१

विषय : बिहार में लव जेहादियों द्वारा साल भर में गुम हुई ३०३७ लड़कियाँ।

महोदय,

समाचार पत्रों से निम्नलिखित तथ्य प्रकाश में आए हैं, जो वस्तुतः पूरी तस्वीर प्रस्तुत न करते हुए भी आँखें खोलने वाले हैं :

१. एक वर्ष में बिहार में लव जेहादियों द्वारा ३०३७ लड़कियाँ गायब हो गई।
२. राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार कुछ मामलों में लव जेहादियों द्वारा छद्म प्रेम प्रसंग और कुछ में मानव तस्करी इसके कारण हैं।
३. पिछले वर्ष देश में इस तरह के ८१३२ मामले दर्ज हुए, जिनमें से पश्चिम बंगाल के ३५७६ और राजस्थान के १४२२ मामले थे।
४. असंख्य लड़कियाँ बाजारों में कई-कई बार बेची जाती हैं और आश्रयहीन अवस्था में जीवन जीती हैं, क्योंकि पुलिस भी कभी-कभी ही इन्हें ढूँढने में सफल होती है और कभी-कभी सफल होने पर भी कुछ नहीं हो पाता।

हमारा सुझाव है कि जिस प्रकार से देश के अनेक देश विरोधी राजनीतिबाजों को कमांडों की सुरक्षा उपलब्ध कराने में दिन-रात एक कर दिया जाता है, उसी तर्ज पर केन्द्रीय पुलिस के जवानों की सेवाओं के साथ-साथ राज्यों की पुलिस में से भी विश्वसनीय जवान लेकर विशेष कार्य बल बनाया जाए, जो लड़कियों/कन्याओं को फंसाकर बेचने और वेश्यावृत्ति में धकेलने में लगे हैं, उन्हें रिश्तखोरी के बिना पकड़े और शीघ्र कठोर दंड दिलवाए। इस कार्य बल की सफलता का मूल्यांकन मंत्रालय के विशेष संयुक्त सचिव की देखरेख में होता रहे और गृह राज्यमंत्री जी उसका प्रबोधन करें। इसके साथ-साथ राज्यों में भी इसी प्रकार के कार्य बल बनवा दिए जाएँ, जिससे देश इस जघन्य पाप से मुक्त हो जाए।

इस संबंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)
राष्ट्रीय अध्यक्ष

(मुन्ना कुमार शर्मा)
राष्ट्रीय महासचिव

(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

प्रतिष्ठा में,

श्री रवि शंकर प्रसाद जी,
माननीय संचार और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री,
भारत सरकार, संचार भवन,
अशोक रोड, नई दिल्ली-११०००१

विषय : १. संचार मंत्रालय के डाक विभाग में अंग्रेजी परस्तों का तांडव।

२. डाक विभाग ने अंग्रेजी को हथियार बनाकर देश की गरीब जनता के साथ क्रूर, निर्दयी एवं बेशर्म तरीका अपनाया।

महोदय,

डाक विभाग के अधीन डाक महा-अध्यक्ष कार्यालयों सहित डाकघरों में कम्प्यूटरों के माध्यम से लगभग सारा कामकाज राजभाषा नियमों की अनदेखी करके अंग्रेजी में हो रहा है। स्पीड पोस्ट और पंजीकृत पत्रों आदि की पावतियाँ हिंदी में पता होने पर भी अंग्रेजी में दी जा रही हैं। पासबुकों में प्रविष्टियाँ अंग्रेजी में की जा रही हैं। ऐसा लग रहा है कि कोई जाँच-पड़ताल और नियंत्रण नहीं है, इसलिए डाक विभाग अंग्रेजी के शिकंजे में कसा हुआ है, जबकि डाकघरों से कम शिक्षित जनता का संपर्क होता है, जो सामान्यतः केवल हिंदी ही जानती है और उनमें अंग्रेजी जानने वाले बहुत कम होते हैं। किन्तु उन पर डाक विभाग के अधिकारी अंग्रेजी थोपने पर आमादा हैं। निवेदन है कि सुधार के लिए तत्काल आवश्यक कदम उठाए जाएँ। इस प्रसंग में सुझाव है कि डाक महा-अध्यक्षों का एक राजभाषा सम्मेलन दो दिनों का रख लिया जाए और उसमें उन्हें कम्प्यूटरों से विभिन्न कार्य विभिन्न कार्य हिंदी में कराने की कार्यविधि के साथ-साथ राजभाषा नियमों और

आदेशों से अवगत कराया जाए। इस संबंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)
राष्ट्रीय अध्यक्ष

(मुन्ना कुमार शर्मा)
राष्ट्रीय महासचिव

(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

शेष पृष्ठ 5 का

पशु पालन के बिना.....

खेती में प्राकृतिक संसाधनों का भी प्रभावी ढंग से उपयोग करना है। इसके लिए हम पशु ऊर्जा का उपयोग मशीनी ऊर्जा के स्थान पर कर सकते हैं। पशु ऊर्जा का उपयोग क्यों करना चाहिए यह निम्न बातों से स्पष्ट होता है।

१. पशुओं का उपयोग किसान की कार्यक्षमता को बढ़ाता है। यह फसलों के विविध पीकरण कृषि क्षेत्र को बढ़ाने एवं समय पर कृषि कार्यों को सम्पन्न करने में सहायक है।
२. मशीनों पर आधारित उत्पादन तंत्र कुछ ही फसलों तक सीमित रह जाता है और इस तरह विविधता को तहस-नहस कर देता है।

३. पशु चालित यंत्र सस्ते, सुलभ और गाँवों में भी बनाये जा सकते हैं।

४. पशु ऊर्जा का उपयोग महंगे और अनवीनीकरण ईंधन पर होने वाले खर्च को बचाना है। पशु खेतों से ही अपने वाले फसलों के अवशेष को खाकर उसे उपयोगी चीजों जैसे-दुग्ध, बायोगैस, खाद इत्यादि में बदल देते हैं, और ये भोजन के लिए मानव के प्रतियोगी भी नहीं हैं।

५. ऊर्जा पशुओं का उपयोग पशुओं को फसलोत्पादन से जोड़ने में किसानों की मदद करता है। इस तरह पशुओं की शक्ति का फसलोत्पादन निरन्तर बनाये रखने के लिए दोहन होता रहता है।

६. एक बार ट्रैक्टर या पावर टिलर की जीवन अवधि जोकि प्रायः बहुत छोटी होती है, समाप्त हो जाती है तो उसका कोई प्रयोगात्मक उपयोग नहीं रह जाता है। पशु उस पर किये गये खर्च को कई तरह से लौटाता है। वह जीवन भर व मृत्यु उपरांत भी पशु पालकों को अनेक उपयोगी चीजें देता है।

७. मशीनों के साथ किसानों के कर्ज में फँसने का डर बना रहता है। यदि बढ़ी ऋण सहायता से मशीनीकरण पूर्ण हो भी जाये तो अधिकतर कृषक आबादी अपनी भूमि छोड़ने के लिए बाध्य हो जायेगी क्योंकि मशीनों की सहायता से बड़े से बड़ा क्षेत्र कुछ ही हाथों द्वारा तैयार किया जा सकता है।

८. मशीनीकरण से भूमि तैयारी में श्रमिकों का परोक्ष रूप से पलायन होता है। यदि यह सीधे फसल सघनता और उपज बढ़ाने में मदद नहीं करता तो रोजगार के अवसरों में कमी आ जाती है।

इस प्रकार से स्पष्ट है कि टिकाऊ खेती में पशुओं का बहुत बड़ा योगदान है जिसको अनदेखा नहीं किया जा सकता है।

हिन्दुत्व कट्टरता का नाम नहीं

- वह उदार है, संकीर्ण नहीं।
- वह गतिशील है, जड़वादी नहीं।
- वह मानव को पवित्र मानता है, पापी नहीं।
- वह समदृष्टि रखता है एकांगी नहीं।
- वह कर्म आधारित है, कर्म काण्डी नहीं।
- वह सार्वभौतिक है, क्षेत्रीय नहीं।
- वह एकेश्वरवाद में विश्वास रखता है, शैतान में नहीं।
- वह प्रकृति को सम्मान देता है, शोषक नहीं।
- वह अहिंसावादी है, हिंसक नहीं।
- ईश्वर कण-कण में है, सातवें आसमान पर नहीं।
- वह विज्ञान सम्मत है अंधविश्वास नहीं।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 9 का **हुरियत कान्फ्रेंस के नेताओं.....**

अलगाव बना रहा। कश्मीरी चाहे वह हिन्दु था या मुसलमान उसकी वंश परम्परा इसी घाटी में थी। अरब-इरानियों के साथ ऐसा नहीं था। उनकी वंश परम्परा अरब की मिट्टी से निकलती थी। कश्मीर के सैयद तो अपनी इस वंश परम्परा का आम कश्मीरी के आगे गौरव गान करने का अपना अधिकार मानते थे। यह गौरव गान स्थानीय कश्मीरियों को नीचा दिखाने के लिए ही था। और अब इस बात की चर्चा की जाए की जम्मू कश्मीर में वर्तमान में क्या हो रहा है? कश्मीर घाटी में, विशेषकर दक्षिणी कश्मीर के दोस्ताना जिलों में जो हो रहा है। उसको समझने में घाटी की जनसांख्यिकी की संरचना सहायता कर सकती है। इससे अन्दाजा लगाया जा सकता है कि कौन से लोग इसमें शामिल हो सकते हैं और उनकी संख्या कितनी कम है। कुछ समय पहले जम्मू कश्मीर के अलगाववादी संगठनों के आह्वान पर कश्मीर घाटी में लम्बी हड़ताल हुई थी। यह हड़ताल लगभग छह महीने चली थी। अलगाववादी संगठनों को आशा थी कि पूर्ववर्ती सरकारों की तरह ही इस बार भी सरकार झुक जाएगी। समझौते के नाम पर बातचीत होगी और अलगाववादी संगठन जनता को बता सकेंगे कि सरकार को झुका दिया है। यह एक प्रकार से मनोवैज्ञानिक लड़ाई थी। अलगाववादी संगठनों को अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए सरकार के मुकाबले ऐसी छोटी मोटी लड़ाइयाँ जीतना जरूरी होता है। यदि जीत न भी हो तो कम से कम जीत का आभास तो होना ही चाहिए। तभी आम जनता का अलगाववादी संगठनों पर भरोसा बना रहता है। कश्मीर घाटी में आज तक की सरकारें अलगाववादियों को या तो जीत का अवसर देती रही हैं या फिर जीत का आभास होने देती हैं। यह पहली बार हुआ कि सरकार ने हड़ताल करने वालों से बातचीत नहीं की। आम जनता में ही अलगाववादियों का विरोध करना शुरू कर दिया। तब अलगाववादियों को हड़ताल का आह्वान वापिस लेना पड़ा। पिछले तीन दशकों में यह अलगाववादियों की पहली पराजय थी। (शेष अगले अंक में)

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलती

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथक्तावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अन्तर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामूलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिले।

केवल इतना ही नहीं, ... भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

:- तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....	150/- रुपये
द्विवार्षिक.....	300/- रुपये
आजीवन सदस्य.....	1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

“हिन्दू सभा वार्ता” के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चेक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 1 का **श्री राम जन्मस्थान, श्रीकृष्ण जन्मस्थान.....**

स्थित बाबा विश्वनाथमंदिर एवं आगरा स्थित तेजोमहालय शिव मंदिर की भूमि को तत्काल मुक्त करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण, एवं बाबा भोले शंकर हिन्दुस्तान की 900 करोड़ हिन्दू जनता के आस्था के प्रतीक हैं। वे हिन्दुस्तान के प्रतीक हैं। दुनिया हिन्दुस्तान को इनकी भूमि मानता है। परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश की सरकार उनकी भूमि मुक्त नहीं कर रही है। जबकि भारतीय जनता पार्टी शुरू से ही मुक्ति की मांग करती रही है। परन्तु अब सत्ता प्राप्त हो जाने के उपरान्त भाजपा जनता से किये वादे को भूल चुकी है। हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय नेता श्री शर्मा ने चेतावनी दिया कि यदि केन्द्र सरकार व भाजपा सरकार देश की 900 करोड़ हिन्दुओं की भावनाओं का सम्मान नहीं करेगी तो अखिल भारत हिन्दू महासभा द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर जनांदोलन चलाया जायेगा। संवाददाता सम्मेलन में प्रदेशाध्यक्ष श्री योगेन्द्र वर्मा, प्रदेश महामंत्री श्री सौरभ शर्मा, सुश्री साक्षी वर्मा, आगरा मंडल अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र शर्मा सहित हिन्दू महासभा के स्थानीय नेता व कार्यकर्ता उपस्थित थे।

शेष पृष्ठ 4 का **स्वास्थ्य का अमूल्य खजाना.....**

मोटापा अथवा चर्बी ज्यादा है, उन्हें शिवाम्बु का सेवन अधिक मात्रा में करना चाहिये। हमारे भोजन में लगभग 20 प्रतिशत क्षार एवं 20 प्रतिशत आम्लिक तत्त्व होने चाहिए। परन्तु अधिकांश व्यक्तियों का आहार आजकल इसके ठीक विपरीत होता है। अतः उन क्षार तत्त्वों की पूर्ति हेतु भोजन के पश्चात् शिवाम्बु ऐसे व्यक्तियों के लिए पावन सुधारने में सहायक होता है। मानव मूत्र आहार अथवा आहार का साधारण परिस्थितियों में विकल्प नहीं है। जिस प्रकार प्रत्येक वस्तु का उपयोग उसकी आवश्यकता मर्यादा एवं विवेक से करना चाहिए उसी प्रकार मूत्र का भी उपयोग स्वयं की आवश्यकता, मौसम, प्रकृति एवं परिस्थितियों के अनुरूप ही करना चाहिए।

रोग को जल्दी ठीक करने के ध्येय से लम्बे समय से नियमित सेवन करने वाली दवाओं को छोड़ कर एकाएक पूर्ण शिवाम्बु का उपचार प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। इसका कारण आज तक रोगी ने अनेक प्रकार के अच्छे या बुरे पदार्थों वाली दवाइयों और इजेक्शनों का उपयोग किया, जिसके कारण रोगी का शरीर एक विशेष आदत वाला बन जाता है। अन्दर जमें उन विजातियों तत्त्वों को धैर्य के साथ शरीर से बाहर निकालना चाहिए ताकि आपका शरीर और मन शिवाम्बु सेवन की अनावश्यक प्रतिक्रिया न करे और करे तो भी आप दृढ़ता से उसका सामना कर सकें।

शेष पृष्ठ 1 का **चीन ने फिर दी.....**

जाने का फैसला करता है या इस घटना के बारे में कोई भ्रम रखता है तो हमारे अधिकारों के संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय कानून के मुताबिक हमारे पास कोई भी कार्रवाई करने का अधिकार है। वांग एक भारतीय मीडिया प्रतिनिधिमंडल को संबोधित कर रही थी। उन्होंने कहा कि इस वक्त भारत के साथ वार्ता करना असंभव होगा। हमारे लोग सोचेंगे कि हमारी सरकार अक्षम है, जब तक कि भारत चीनी सरजमीं से सैनिकों को वापस नहीं बुला लेता है हमारे बीच कोई ठोस वार्ता नहीं हो सकती। उन्होंने भारत को छेड़ते हुए कश्मीर का मुद्दा उठाया और भारत और नेपाल के बीच के कालापानी विवाद का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि हमें लगता है कि भारत के लिए ट्राई जंक्शन का इस्तेमाल करना कोई बहाना नहीं हो सकता। उन्होंने भारत के विदेश मंत्रालय के इस बयान का जिक्र किया जिसके तहत भारत ने कहा कि देश के मुख्य हिस्से को पूर्वोत्तर से जोड़ने वाले संकरे इलाके में चीन, भारत और भूटान ट्राई जंक्शन में सड़क का निर्माण यथास्थिति को बदल रहा है। उन्होंने कहा कि भारत के भी कई ट्राई जंक्शन हैं। क्या होगा जब हम यही बहाना बनाएंगे और चीन, भारत और नेपाल के बीच कालापानी क्षेत्र में घुस जाएंगे या भारत और पाकिस्तान के बीच के कश्मीर क्षेत्र में घुस जाएंगे। वांग ने कहा कि ट्राई जंक्शन का इस्तेमाल और अधिक संकट पैदा करेगा। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने केन्द्र की राजग सरकार से चीन को करारा जवाब देने की मांग की है। उन्होंने कहा है कि चीन अब भारत को 1962 वाला भारत न समझे। भारत उसे सबक सिखाने में सक्षम है।

यह भी सच है

गौ-वध के विरुद्ध संत गोपाल दास के नेतृत्व में देश करेगा जन युद्ध

भारत में गौ-हत्या बन्दी के लिए स्वामी दयानन्द, गुरुनानक देव, भगतसिंह, असफाख उल्ला खान, सरदार पटेल, महात्मा गांधी, विनोबा भावे, नामधारी कूकके सिक्ख, से लेकर अब तक के क्रम में हमारे गौभक्त/देशभक्तों के साथ आज भी सरकार वही दमनकारी नीति अपना रही है। गोचर भूमि के बहुउद्देश्य व बहुमूल्य उपयोगिता को समझते हुए संत गोपाल दास जी 2 जून 2016 से अनशन पर हैं, और उनके समर्थन में हजारों गौभक्त हरियाणा के कई जिला मुख्यालय पर शांतिपूर्ण धरने प्रदर्शन व अनशन कर रहे हैं। हमारे पूर्वजों द्वारा 36 बिरादरी के कल्याणार्थ 3 करोड़ 32 लाख 50 हजार एकड़ भूमि गोचराण के लिए आरक्षित की गई थी, आरम्भ में ये कुल भूमि का 93 प्रतिशत थी, बाद में आधुनिकता की अन्धी दौड़ व भौतिक विकास के चलते 5 प्रतिशत कर दी गई। आज हाई कोर्ट व सुप्रीम कोर्ट के आदेशों के बाद भी सरकार की हठधर्मिता व लालफीताशाही के चलते भूमि की लगातार नीलामी हो रही है। N.D.R.I और N.G.B.R.I के अंतराष्ट्रीय शोध में Dr.M. Sadana द्वारा Natural Cow Breed का एक बड़ा चकित करने वाला प्रमाणिक शोध सामने आया है जिसमें देसी नस्ल की गाय प्रदूषित चारा खाकर भी शुद्ध दूध ही देती हैं। A2 मिल्क और विष मुक्त दूध को लेकर वर्तमान समय में जूनागढ़ विश्वविद्यालय के शोध में गीर गाय के पवित्र गोमूत्र में द्रव्य रूप में सोना मिला है। गऊ माता को ऋषि मुनियों के शोध अनुसार सोने की कोख कहा गया है। आज आधुनिक विज्ञान भी इस शोध पर प्रमाणिकता के साथ मोहर लगा दी है और विडंबना है कि इतने पवित्र जीव को आज प्लास्टिक, कूड़ा, करकट, झूठी पत्तलें खाकर प्रताड़ना व श आकाल मौत मरना पड़ रहा है।

वर्ष 2014 दिल्ली में 23 वें अन्तराष्ट्रीय चारागाह कांग्रेस में 96 देशों के प्रतिनिधियों ने भी चारागाह भूमि को गाय/गरीब/गांव को संरक्षण/संवर्धन के लिए अति आवश्यक माना था। राष्ट्रीय चारागाह शोध संस्थान झांसी के एक शोध पत्र में स्पष्ट बताया गया कि चारागाह भूमि की कमी के चलते 92 प्रतिशत पोष्टिक चारे की कमी हो गई है जिसके चलते पशुधन में बांझपन दूध उत्पादन, गुणवत्ता व उत्पादकता की समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हर पशु का प्रतिदिन 3 कि. मी. टहलना उनके स्वास्थ्य के लिए जरूरी है, A.P.D.A के शोध अनुसार भारत में 66 प्रतिशत दूध अप्राकृतिक पशुपालन के चलते जहरीला हो चुका है। साथियों अगर नेपाल, इजरायल, रूस व अन्य कई देशों में गौ हत्या पूर्णतया बन्द हो सकती है तो जगतगुरु भारत में क्यों नहीं? सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों के बाद भी 3,32,50,000 एकड़ गोचराण भूमि खाली क्यों नहीं? सारी बात यह है कि भारत सरकार को गौ संरक्षण और गौ संवर्धन के लिए सम्पूर्ण अव्यंग नियम कानून के तहत इसे देश की सीमा, जाति, धर्म से परे वैज्ञानिक शोध के आधार पर श्रेष्ठ प्राणी का दर्जा दें। ये चलता फिरता देवालय औषधालय है। आदिकाल से भारत देश की अर्थ व्यवस्था मांस आधारित नहीं रही विडंबना है आज भारत दुनिया में मांस निर्यात में पहले नंबर पर है एक साध्वी मांस मंत्रालय की मुखिया है। गाय को माँ कहने वाले देश के मुखिया हैं जो शायद गाय को केवल वोट एटीएम मानते हैं। लालूजी ने तो चारा खाया था। C.A.G रिपोर्ट के आधार पर रामराज्य उदारवादी सरकार ने तो सारा चारागाह ही डकार लिया है। इसकी जाँच कोन कब करेगा इस मुद्दे पर जनता की उदारसीनता के आने वाली पीढ़ी को नरक में धकेल देगी इसलिए पूरे देश में गौहत्या पूर्णतः बन्द करनी होगी, देश के सारे कत्लखानों को पशु चिकित्सालय बनाना होगा। सरकारी आकड़ों के अनुसार 3,32,50,000 एकड़ जमीन को गौ अभ्यारण (Cow Sanctuary) के रूप में विकसित करने होंगे। देश भर में गौ पैशन प्लान (9000 रुपये) तत्काल लागू करने की जरूरत है।

मांस पे चलने वाले अर्थशास्त्र अनर्थशास्त्र को हमें समझना-समझाना पड़ेगा। अन्यथा गाय भी समाप्ति की ओर हैं। और जहरीला अन्न खाकर हम भी बहुत सारी बीमारियों के साथ तिलतिल मरने को मजबूर हैं। अभी के हालात देखकर लगता है ज्यादातर लोग सिर्फ जिन्दा है। जीना मतलब खुशी-खुशी जीना तो अभी उनसे कोसो दूर है। इंडियन मैडिकल कौंसिल व वर्ल्ड हेल्थ आर्गनाइजेशन की राय में प्रति व्यक्ति 205 ग्राम दूध आवश्यक है। बच्चे, बूढ़े, जवान, हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई दूध सभी की जरूरत है आज 66 प्रतिशत दूध व दुग्ध उत्पाद बाजार में मिलावटी (जहरीला) हैं। शुद्ध दूध मशीनों से मिलना असम्भव है गौधन हमारे देश में खत्म होने की कगार पर है। ऐसे में इस गम्भीर समस्या को राजनीतिक रंग देने वाले लोगों को समझना-समझाना है कि हम किसी जाति/सम्प्रदाय/धर्म विशेष या व्यक्ति/संगठन/पार्टी विशेष के विरोध या समर्थन में नहीं हैं बल्कि हम लोग "अवसर-संगठन-व्यक्ति, अनेक परन्तु मुद्दा एक" हमारा संकल्प गौमाता व मानवता को बचाने और मानवीय व्यवस्था को स्थापित करने का है।

कबिरा खड़ा बजार में

अनुपस्थित माननीयों पर कार्रवाई क्यों नहीं



कक्षा में उपस्थिति का एक मानक तय होता है। इससे कम उपस्थित होने पर परीक्षा तक से वंचित कर दिया जाता है। नौकरियों में भी अनुपस्थित होने को चरणों में बांटा गया है। छुट्टियां समाप्त होने पर लीव विद आउट पे कर दिया जाता है। तो हमारे सेवक सारी सीमाओं से बाहर क्यों हैं। उनकी भी छुट्टी या अनुपस्थित होने की सीमा तय होनी चाहिए। संसद में सदस्यों की अनुपस्थिति का मसला एक बार फिर सवाल के घेरे में है। राज्यसभा में क्रिकेट के मसीहा सचिन तेंदुलकर और प्रख्यात अदाकारा रेखा की लगातार अनुपस्थिति का मसला जोर-शोर से उठा। सदस्यों ने सवाल उठाया कि अगर इन के पास वक्त नहीं है तो सांसद बनते ही क्यों हैं या उन्हें सांसद बनाया ही क्यों जाता है। दोनों की ही राज्यसभा में मौजूदगी नाम मात्र की रही या न के बराबर रही है। अब तक इस गंभीर विषय पर संसद के बाहर ही चर्चा होती रही थी लेकिन संसद में यह प्रश्न उठना इस विषय पर किसी निर्णायक स्थिति में पहुंचने की आवश्यकता को व्यक्त कर रहा है। प्रश्न केवल सितारों का नहीं है बल्कि सभी दलों के सांसदों की संसद में उपस्थिति के विषय पर बरती जा रही लापरवाही एवं संसद के प्रति अरुचि का है। जरूरत है एक ऐसा कानून बनाने की जो कम से कम 900 दिन की सक्रिय उपस्थिति को सांसदों के लिए अनिवार्य करे। संसदीय कार्यवाहियों को सुचारु रूप से चलाने एवं उनमें समुचित जन-प्रतिनिधित्व के लिए यह बहुत जरूरी है ताकि संसदीय कार्यों के प्रति अरुचि व लापरवाही खत्म हो। सांसदों की उपस्थिति को लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बहुत सख्त हैं और इस विषय को लेकर उन्होंने सांसदों को चेताया भी है। वे कई बार सांसदों को उपस्थित रहने के लिए कह भी चुके हैं। लेकिन सांसदों पर इसका कोई असर नहीं दिख रहा है। प्रश्न किसी दल का नहीं, प्रश्न किसी बिल को बहुमत से पारित कराने का भी नहीं है। प्रश्न लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में लोकतांत्रिक प्रतिनिधियों की जबाबदेही एवं जिम्मेदारी का है। सबके लिये नियम बनाने वाले, सबको नियमों का अनुशासन से पालन करने की प्रेरणा देने वाले सांसद या विधायक यदि स्वयं अनुशासित नहीं होंगे तो यह लोकतंत्र के साथ मखौल हो जाएगा। जब नेताओं के लिये कोई मूल्य मानक नहीं होंगे तो फिर जनता से मूल्यों के पालन की आशा कैसे की जा सकती है। सांसद सरकार से सुख-सुविधा प्राप्त करें, यह बहुत गौण बात है। प्रमुख काम है देश के सामने आने वाली समस्याओं का डटकर मुकाबला करना। अपना समुचित प्रतिनिधित्व करते हुए देश को प्रगति की ओर अग्रसर करना, उसे सशक्त बनाना। लेकिन ऐसा न होना दुर्भाग्यपूर्ण है, लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को कमजोर करना है। संसद देश को उन्नत भविष्य देने का मंच है। सरकार इस पर जनता की गाढ़ी कमाई का बड़ा हिस्सा खर्च करती है। देश का भविष्य संसद एवं सांसदों के चेहरों पर लिखा होता है। यदि वहां भी अनुशासनहीनता, अशालीनता एवं अपने कर्तव्यों के प्रति अरुचि का प्रदर्शन दिखाई देता है तो समझना होगा कि सत्ता सेवा का साधन नहीं, बल्कि विलास का साधन है। यदि सांसद में विलासिता, आलस्य और कदाचार है तो देश को अनुशासन का पाठ कौन पढ़ायेगा। आज सांसदों की अनुपस्थिति के परिप्रेक्ष्य में इस विषय पर भी चिन्तन होना चाहिए कि जो वास्तविक रूप में देश के लिये कुछ करना चाहते हैं, ऐसे व्यक्तियों को संसद के पटल पर लाने की व्यवस्था बने। कोरा दिखावे न हो, बल्कि देश को सशक्त बनाने वाले चरित्र सम्पन्न व्यक्ति राज्यसभा में जुड़ें, इसके लिये नये चिन्तन की अपेक्षा है। हर कीमत पर राष्ट्र की प्रगति विकास-विस्तार और समृद्धि को सर्वोपरि महत्व देने वाले व्यक्तियों को महत्व मिले, जो संसद के हर क्षण को निर्माण का आधार दें।

श त्यागी

E-mail : viresh@nilbharathi.org

